आवरण चित्र
चित्रकार मास्टर सुखदास की एक नवीन कृति

सुख का सुगन्ध
रचा तूलिका के थपथप से,
आकाश, धरती और हिम आवरणित पर्वतसमूह।
बांधा सुगन्ध से, सुख के, समस्त विस्तार को,
और उतारा चन्द्रभागा में शनैः शनैः,
प्रसारित करने विश्व में सर्वत्र,
सुगन्ध सुख का,
सुखदास, मास्टर चित्रकार ने।।

संस्था के कुछ सीमित उद्देश्य हैं:
लाहुल व स्पिति तथा हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा व संस्कृति से सम्बन्धित काम करना, इनके विषय में सामग्री एकत्रित करना तथा इस क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों तथा संस्थाओं और सरकारी विभागों व संस्थाओं से आदान–प्रदान करना।

संपादक– तोबदन

सहयोग रू. 50/-

सभी फोटो तोबदन द्वारा

पेज नं.

सम्पादकीय

प्रस्तुत अंक में भारतीय भाषा अध्ययन के इतिहास के महान नायक ग्रियर्सन द्वारा भारतीय भाषा सर्वेक्षण के लिए चयनित प्रसिद्ध कथा 'नालायक बेटा' को ले कर इसको इस क्षेत्र की छोटी छोटी भाषाओं में अनुवाद कर प्रस्तुत किया गया है। इन में से कुछ भाषाएं ग्रियर्सन की सूची में स्थान नहीं पा सके थे। वर्तमान में भी कुछ संस्थाएं इस प्रकार के कार्य में प्रयासरत हैं। इस विषय में सन् 2010 में कुल्लू और केलांग में संगोष्ठियां हुईं थीं जिस में स्थानीय विद्धानों और क्षेत्र से बाहर से आए विद्धानों ने सोल्लास और उत्सुकता से सहभागिता दिखाई। फलस्वरूप प्रयत्न काफी लाभदायक सिद्ध हुआ और इसके परिणाम भी ऐसे ही आने चाहिए। यह कार्य इतना दुसाध्य है कि प्रयत्न चाहे जितना भी गम्भीर और व्यापक हो फिर भी कोई न कोई पक्ष छूट ही जाता है। सभी की अपनी अपनी प्राथमिकताऐं हैं और सीमाऐं व कठिनाइयां हैं: साधन, सुविधा और बहुत कुछ। इसलिए संभावना है कि ऐसी ही कुछ कमियां वर्तमान सर्वेक्षण में भी रह जाएं। यहां हमारा मूल प्रयत्न आधार स्तर पर उपलब्ध होने वाली प्राथमिक सामग्री को जिस भी स्थिति में हो और किसी भी मात्रा में हो सके एकत्रित कर संरक्षित करना है जिस पर विशेषज्ञ भविष्य में कभी भी काम कर सकते हैं।

वर्तमान अंक के विभिन्न भाषाओं के लेखकों का अपने अपने क्षेत्र के अपनी अपनी भाषा पर उनका अधिकार है, बेशक वे विशेषज्ञ नहीं है या उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाया है। उनके प्रयास से इस में भाषा का मूल चरित्र संरक्षित हुआ है, यह महत्वपूर्ण बात है। कुछ लेखकों को जो लेखन में अभ्यस्त नहीं हैं मूल कहानी के कुछ वाक्यों को ठीक से समझने में कुछ कठिनाईयां अवश्य आईं होंगी। परन्तु उनका प्रयास हर तरह से सराहनीय रहा है। हम आशा करते हैं कि वे अपनी कोशिश आगे भी जारी रखेंगे।

इस पत्रिका के लिए उपलब्ध सामग्री के विषय में एक बात यहां कहना आवश्यक है, विशेष रूप से पद्य रचनाओं के विषय में। अधिकांश रचनायें उपदेशात्मक हैं। हम यह नहीं कह सकते हैं कि साहित्य के क्षेत्र में इसे किस स्तर पर रखा जाता है। परंतु यह अवश्य कह सकते हैं कि आज का पाठक बहुत ही प्रबुद्ध है और उसके पास प्रवचन सुनने का धैर्य कम है तथा उसके पास समय भी नहीं है। हमारा प्रयत्न हमेशा यह होना चाहिए कि हमारी मेहनत व्यर्थ न जाए।

पत्रिका के लिए सामग्री उपलब्ध कराने में विद्धान लेखकों ने अथक प्रयास किया है। कुंज़ोम उन सब रचनाकों का आभार प्रकट करती है। कुंज़ोम उन सब का भी सहृदय धन्यवाद करती है जिन्होंने इसको एक कदम और आगे बढ़ाने मैं, वह चाहे किसी भी रूप में हो, कितनी भी मात्रा में हो, सहायता की है।

–तोबदन

भाषा

मूल कहानी, हिन्दी में

नालायक बेटा

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमें से छोटे बेटे ने अपने बाप से कहा, हे पिता जी, आपकी दौलत में जो मेरा हिस्सा है, उनको मुझे दे दीजिए। तब असने अपना धन उनमें बांट दिया। बहुत दिन नहीं बीते, कि छोटा बेटा सब कुछ बटोर कर दूर देश चला गया और वहां लापरवाही से दिन बिताते हुए अपना धन उड़ा दिया। जब वह सब कुछ गवा चुका तब उस देश में अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। तब वह उस देश के किसी भले मानुष के यहां जाकर रहने लगा जिसने उसको अपने खेत में सूअर चराने को भेजा। वह चाहता था कि मैं अपना पेट उन भोज्य पदार्थों से भरूं जिन्हें सूअर खाते हैं पर उसको कोई कुछ नहीं देता था। तब उसके ध्यान में आया और कहने लगा कि मेरे बाप के यहां इतनी अधिक रोटी होती है कि कितने ही मजदूर पेट भर खाते हैं आर बच भी जाता है और मैं भूखा मरता हूं।

मैं उठता हूं और बाप के पास जाकर यही कहूंगा कि हे पिता जी मैं भगवान से विमुख हुआ और आपके सामने पाप किया। मैं फिर आप का बेटा कहे जाने योग्य नहीं। मुझे अपने एक मजदूर जैसा बना कर रखिए। तब वह उठकर अपने बाप के पास चला। पर वह दूर ही था कि उसके बाप ने उसको चूम लिया।

बेटे ने कहा हे बाप मैंने भगवान के विमुख और आपके सामने पाप किया और आपका बेटा कहे जाने योग्य नहीं। पर बाप ने अपने नौकरों में से एक से कहा कि इसको सबसे अच्छा कपड़ा पहनाओ और हाथ में अंगूठी व पांव में जूते और चलो हम लोग खाएं और बातें करें क्योंकि यह बेटा मरे हुए के समान था अब फिर जीवित हो गया है। गुम हो गया था अब फिर मिल गया है तब वे सुख से रहने लगे।

उसका बड़ा भाई खेत में था। जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा तब उसने नाचने गाने की आवाज सुनी। उसने अपने नौकरों में से एक को बुलाकर पूछा कि यह क्या है। उसने कहा कि आपका भाई आया है और आपके बाप ने जश्न मनाया है क्योंकि उसको जीवित पाया है। इस पर उसने अप्रसन्नता दिखाई और घर के भीतर नहीं जाना चाहा पर उसका बाप बाहर आकर उसको मनाने लगा। उसने बाप को जबाव दिया कि देखिए मैं इतने बरसों से आपकी टहल कर रहा हूं और आपके आदेश का पालन किया और मुझे आपने कभी एक मेमना भी न दिया कि मैं अपने साथियों के साथ घूमता। पर आपका यह बेटा तो नालायकों के संग रह कर आप के धन को खा गया है। जैसे ही वह आया वैसे ही आपने उसके लिए बढ़िया जश्न किया है। बाप ने उससे कहा हे बेटे तू सदा मेरे साथ रहा है और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है। पर खुशी है क्योंकि यह तेरा भाई मानो मर गया था। फिर जीवित हो गया है गुम हो गया था फिर मिल गया है।•

कहावत – जो भाव खोकसर, सो चौदह कोटाड़ी।

अनुवादः
पांगी

नलैक क्वा

क मैहणू दू क्वे थिएं। तेन्हे बिच्छी मठड़ा क्वे अपु बब बोलू। हे बबा, तां दौलत बिच्छी ज़े मं हेस्सा अई तस मूंदी छड़। तिखैं तैनी अपू धन तेन्हे बिच्छ बंटा। मते दिन नौते बुतोरे कि मठड़ा क्वा सोब किछ बेहड़ करी दू देश नश गिया और तड़ी लापरवाहिया जोए दन बताइयो अपू धन उड़ाई छड़ा। ज़खेंई तैनी सोब किछ गंवई छड़ू तखेंई तस देशा अन्तर अकाल पड़ा और से कंगाल भोई गिया। तखेंई से तस देशे कसेरी भले मानसे तड़ी घेइ करी बिशणे लगा। तनी भले मानसे से अपू बग सूर चान दि बझा।

खींण दि पेट भरी रोटी बि न दैंतथ ।

तेखेंई तस ध्यान योआ और बोलण लगा कि मं बबे तैड़ी इतरी ज़ैदी रोटी अई कि ज़तरे बि मजूर पेट भरी खींते फिरी बि बची धेंतू और अउं इड़ी भ्युखा लगोरा मरन।

अे त अउं बब केईं धई करी अहीए बोता कि हे बबा अउं भगवान केणा विमुख भुआं तठां तौ सामणे पाप किया। अउं तां क्वा कहणे लायक नेईं। मूं अपू अक मंजूर ज़ना बणाई करी थे। पर बबे अपू क्वा दौड़ी करी गड़े लौआ। क्वे घिया वापिस ईणे जश्न मनौआ।

मोटे क्वे बब पुछ़ा – तां अे क्वा त नलैक जोई बिश करी तां धन खइ गियेरा अस्ता। ज़ना से योआ तना तेई तस दि अबल जश्न कियेरा अस्ता। बबे तस बोलु, हे कोया तु हमेशा मूं जोई रहेरा और ज़े किछ मं अस्तू से तां भै। पर खुशी अस्ती किस कि अे तां भई मानो मरी गियेथां। फिरी जींता भोई गिया। गुम भोई गियेथां फिरी हेतीं गिया।•

अनुवाद – गणेश भारद्वाज

कोअ

एक मांहुर दुइ कोए थिए। तेन दुइ कंइलि मठा कोए अऊं बह्स बोलुं (कंइ) बहः, तऊं दौलता कंइलि में ह बंठ जे अस, तेस मूं दी बिज। थेसु तेनी अऊं धन तेन दुइ बिचा बंडी बिदु। मह्स ध्याड़े बितोरे नोसते तेल्की म ठा कोअ बध्धे धिर ठ्रोका करि परदेशारि चलता गेया त तेठे लापरवाही साथे ध्याड़े कहाते-2 अऊं धन मुकइ बिदु। जेखें तेनी बध्धे धिर नशालि बिदु तेखें तेस देशा अनका गेइ त से कंगाल भुइ गेया (कंइ) तेखें से तेस देशेरे केसा भलमणशे कंइ गछी बेशबे ठाहरूआ जेनि से अऊं छेतरा सुंगुर चारबे बिदा। तेनि चेतु कंइ हऊं मऊं पेट तेने खइ बे चीज़े लइ भरू जे सुंगुर खांदेस। पर तेस कया खिएं न देंदेति। तेल्की तेस ध्याना आऊं त से बोलबे ठाहरूआ ि क मेंह बह्स कंइ एतोक रजि रोटि अस कि केतोक भुआ पेट भरी खांदेस तांबि बचिए गसतिस त हऊं भुकरे मर तस।

हऊं उठी बह्स कछा गछी बोलु कि ऐ बहः! हऊं भगवानेसरि दूर भुआ त तऊ अगरा पाप कियस। हऊं फिरि तऊं कोअ बोलबे जोगा निऊं मूं तऊं नोकुर जंइ बणई थेए। थेसु से उठी अऊं बह्सरि चला (कंइ)। अइता से दूरए थिआ तेल्की तेसेर बंह्इ तेस पोखि धिति। कोएं बोलूं ऐ बहः! मीं भगवानेसरि दूरी की त तऊ अगरा पाप कियस त तें कोअ बोलबे जोगा निऊं। पर बंइ अऊं नोकुरा कंइलि एकिस बोलूं कि इस बध्धेंअरि करि रूठ्ठे डबें लवाल। त हता अऊंठि होरके कोन्ज़े भूटे लवाल। त हटे असपीं खंऊले ओ गप्पे करले। केमाकि इह् कोअ मुरेर

बराबुर थिआ हेबे फिरी जिनदुअस। हराउई गेउरा थिआ हेबे फिरी हतुइ गेअस। थेसु तेने बध्धे जंइ सुखे साथे बेश बे ठाहरूइ गे (कंइ)।

तेसेर जेठा भाइ छेतरा थिआ। जेखें से अइंदे घरा कछा आपरा तेखें तेनि योंद्रा करबा शुणा। तेनि अऊं नोकुरा कंइलि एकिस अइबोलि पूछूं कि खि भुइबे ठाहरोरू अस। तेनि बोलूं कि तें भाइ आओरा अस त तें बंइ बध्धाई देणी लाउरी अस केमाकि से जिंदा हतुअस। तेठिं रोए तेनि निराज़गी हेरालि त से घरा अंधरे निछा गछबे। पर तेसेर बहः भइरां अइ तेस मनाइबे ठाहरूआ (कंइ)। तेनि बहूस जुबाब धिता कि हेर हऊं ऐतोक बरिएलि तेंहू टेहिल करबे ठाहरोरा असतस त तें भाशे भी मनतस त मूं तीं कधि एक उरनू तचे न धितु कि हऊं मऊं साथी साथे हटू। पर तेंहू इअ कोअ त निलायिकः साथे बेशि तेंहू बध्धे धन खइ गेया। जेन्ने से आ तेन्ने तीं तेसरे रूठ्ठी बधाई किहूस बंइ तेस बोलूं कंइ, ऐ कोअ तु हमेशा मूं साथे बेठा त जे खिं-खां मेंहू अस से बध्धे तेंए भो। पर खुशी अस केमाकि तें इ भाइ त चेहूए मरि-ए गेअति। फिरि जिनदुअस। हराउइ गेअति फिरि हतुइ गेअस।

अनुवाद– अनामिका ढिस्सा

कणाशी

खुराव छो

इद का निस छो, दु बाप लून मा, बा। अक हिस्सा हिसाबकर, निसमी राण मु दु रास, आधा आधा राणम्। धालग इवाड़ी वग, फाग छो, टका चोर केए दूरा भग आनन्दी अब भ रजिस नाशी वस, अन टका खत्म शणमस्। शग दे खत्म छिगी वराएक नांगटा, देश छारग शोमिला खासज़ तो, दिद नाशिंग। सूअर अब रांग नाशिंग, सूअर दु धनगे जात इदी मे जातंग। दुगो हसि मा शंटश। समझगे दु ध्यान समझगेक, लोतेग समझेक अग बाद होउग मिलेग जा मिनकेन ता गुवाहका खर्ज तो।

गु अच गेक, वा दा वगेकेक, धनगे लोतक। वा भगवानोस साथ के को, काण सामने पाप शौणमक कान गा छो मा वणेक, अंग मजदूर तोक।

भचिश वा दी ब्रोकेक । पर दूरकेक, वा पाथव वारा वाश लोन व शोमिला लटपटा गा रांग, गूठ पा मूदेड़ी, गोडिंग बूट गारांग। पर दा जागेन ता ढुगेश तो, छो शिव दा दो, भेज छोकेश सुखीस काम वा शांटग, वी गौण भी मिलेग, दु गा भाउ शोवा तोदकू। जबे किमा वी टपे कोण, जाच वाजा छाम ए नोकरो रीचे मो जुआरू लोन वो, गु नु छेतोये, कान का भाउ भराक, कान का वा जाच लाम् क भरोकेन कान वाश खुशी जाच लाम, दुआ भाउ नुराज नोर दानक्। गी को भार कोग भिज सो मुतक। दु का वा बाहर भगेक मन्याउत्। वा ओ जबाव लोन मो बा नो दु वर सेवा शौण मेक। दुकाने का गला गप छामा गु मन्था मे काग छिगी मेअं केन के अनु सगी नाशेतांग दुगा रांग वोग तोंग। कान को छो फोगु छो वेईमान संगी रांग कुलुव वैस वो, कान का छो पार्टी रांग।

छौ अंग रांग नाश गीर, अंक तोश दुआ काच। पर खुशी शीग का खुशीमेदे गन, वाश भरोक, कान का शीगौण, भी हसेग सुखीच भी भगेक।•

अनुवाद–बालक राम

तिनन

तनद योचा

इचा मिज़ी ञीमी योचा तरि। दोंगज़ी फेची योची इन्ज़ू आवरिंग कुमिचा। आवा, केनू (लोंगचोद) नोर चलाग नांग ग्यु डब्बू वंट तोतो, दू गेरिंग रंगी चरती दोंगज़ी इन्ज़ू डब्बा दोतू विचांग छगकी चरती। अलिगशा दयाड़ा शुकि मतोरि वे फेची योची इनज़ू वाते डब्बा हंगकी खेई नमुंग (युललांग) अन्ची इमिचा। दोंग ई थलांग इन्ज़ू डब्बा वाते लाशेरचीरांग कोकि चरमिचा। जव दोई इन्जू बाते दिर कोसी तरि बे दू देशांग (युलनांग) दोट्रो गाटे रूड़ अमिन्चा वे दू शुतल (नंगट चेडल्न) शुकि इमिन्चा। दोरांग दू इचा ञीशी (साफर) मी रांग जोकि तोकिचा। दोई दोरिंग इन्ज़ू रिरिंग (फाग) सुअर रागपी चरमिचा। दू मिज़ी थेज़िज़ा बे गेला फाग ट्रो ञीशी ञीशी स्रंग ज़ई इंगू खोग पिंगटा। पर दू मीरिंग अचिला खेल्ले रण्ट्री मातोरे। इच जाड़ दोरिंग हिद अन्ति वे ग्यु आबू दोंग दोट्रो गाटे ज़मिन तुंगमिन शुपि अलिग्ये दुंगकिवची खोग कासकी ज़मिन जई। अलिगे ज़मिन किशी इवियांग गी योंगी जोकि तोतोग।

गी (अन्चितोग) अन्चीतोग अई आबू कचांग ई कुटाग वे, हे आवा, गी कोन्चोगतांग हावसी शुईगा। अई गी केनू कचाग पाप (दिगपा) लीग्। गी आसकी केनू योचा कुट्रिम जोगे मातोग। गेरिंग केने इचा दुंगकिप चोकन् लगकी योगति।

दू अन्ची थलांग इन्ज़ू आबू दोंग इलि। अईन छेकड़ो ग्याग दोम्ज़ी थलांग इन्ज़ू आबी शारी। योची इन्ज़ू आवरिंग कुड्री ऐ आवा गी कोन्छोगतांग हावसी शुईगा। केनु कचांग गी पाप लीगा। गी केनु योचा कुट्रिम जोगे मातोग।

आवी दुंगक्युवतू विचांग इचा दुंगक्यपारिंग कुड़ी वे, दोरिंग बदबे ञीशी खम चुगकि रण्ट्री। गुड़िंग धुरतव, पांगरिंग वूट चुगकी रन्ट्री। युची दा इनागकी ज़मिन जातोई अई शोव चरतई। खेरिंग कुशी वे दी योचा सिल्लाग तोरि ओन आसकी स्रिड•री। योन्ड्री तोरि औन आस्की छुगति। दू थलांग सेम किदपो लगकि जोरिरे।

हाटीग आचो रिरिंग तोरि। क्युम कचांग पिकके तोरि औन्तरो गरमिन् क्योरवी थस्पाग। हेट आचोई दुंगकिप्तु विचांग इच दुंगकिपरिंग अन्ता कुड़ी वे दी कद खी शुग। इंच दुंगकिवपी कुड्री केनू नुकः अंगक्याग केनु आवी दू अम्पीम खुशीरिंग गरपी क्योर वी लग्क्याग खेरिंग कुशी सेत दू आसकी स्रींगगी पीड़ी। दोरिंग नूक अमिनतु थददे मनति अई क्युमुंग इविरिंग दोरिंग हिठे मनति। पर दू आवी फि रिंग अंगकी फूल्ले चोलची तोरि।

दोई इनज़ू आवरिंग कुड्री वे खन्टी गेरिंग एन्डी (वर्ष) लो शुई केनू टेल लगकी। गी केनू शोबते दोट्रो ञीश लगकी रिड्री तोतेग, तोग तक केने गेरिंग इचा कुरचा ला मरिणीती।

पर दी केनू तनद योचा तनद एनते तांगला जोकि केनू डब्बा ज़रि। ओन्ने दू अन्ति, केने ओन्ने दोरिंग अम्पीरांग ञमपो गरपी क्योरवी लेईति। हाटी योचरिंग इन्जू आवी कुड़ी, योचा क तोग तक गेरांग ञम्पु जोसि। ग्यु चालग फालग वाते दी कन्नूए शुद। पर सेमरींग ञीशी अम्पाग खेरिंग कुशी वे कनू नुक दी सिये ईयाग। आसकी स्रींगरी। योन्ड्री तोरि, आसकी छुगति।•

अनुवाद –रन्धीरसिंह मनेपा

लोक्कड़ा योह्

इ मिउ जुट योह्कु तोइकु।
दोकूह् विचड. बाड़े योह्ज़े एनो बाह्रड. कुत्तो।
ए बाह् केनोटड्.गः ढब्बारिड्.ज़ें चि ग्यू बण्ठ तो, दुगिबि रैं चर्तुः।
दड. दोई एनोः धनः दोकूह् बिचड. फये रन्दो।
म्हस ध्याड़ा मडेह्कः भेई बाड़े योह् भत्ते–धिर लेन्ज़ा ओइतारः देशड. अच्वा इलि दड. दोर यर–यरतिड. ध्याड़ा चर्चा एनोः धनः यहोन्ये केतोः।
अउं घड़ि दोइ भत्ते–धिर यहोचे केतो दड. दु देशड. अनकाड इल्जः दड. दु चड्.कन शुचे इल्जः।
दड. दु दु देशो अउंआ रूठेः मिउ दोर इल्जे बड्.ज़ि ठाह्रेक्शिद अउंदी दु एनोः रहीरिड. सूःर रवक्वि चर्चतो।
दोइ चेहकतो भेई गेः घ्यंड.ो खोग दु ज़स्तेचे पिड्.मोग अउं सूंःरचे ज़ोवःतोर।
(पर) दोबि अचिआ छल्ले मरण्ड्रते।
धोता दोबि ध्यान अन्जः दड. क्वातो क्वा भेई ग्यू बोउ दोर धों म्हस रोटि श्वा भेइ अञों शुदा बज्वादारचे कश्शीह् ज़ोवःतोर दड. न्वशे ल यवा (दड.) गे योञि सिवःतग।
गे अचतग दड. बोउ कचड. इल्जे दीह्ए कोग भेइ ए बाह् गे भगवानो ओइ शुतेग दड. केनोः तुइ पाःप ल्हतग।
गे यहच्चा केनोः योह कुट्रिमि जोःगे मशुगः।
गे केनोः इ बज्वादाःरो ट्रोः ल्हे तोउ।
दड. दु अचा एनोः बोउ कचड. बोन्जः।
पर दु ओईआर ए तोइ भेइ दोउ बाह्ज़े दोबि फ्ग रैं चर्ति।
योह्ज़े कुतोः ए बाह् गे भगवानो ओइ दड. केनोः तुइ पाःप ल्हतग दड. केनोः योह् कुट्रिमि जोःगे मशुगः।
पर बाह्ज़े एनोः परगरःतु बिचड. इदिवि कुतोः भेइ दिबि भब्बे रूठेः खम लेह्तुइं दड. गूःड़िड. गुइथब ए कोन्ज़ःरिड. पोउल्हः।
दड. जोइं हेन्ज़े ज़ोइं ए गप्पारे ल्होइं।
छेरि कुचे दि योह् सी रड. ख्यदमेः तोइ द यहच्चा श्चिडे. इल्जः।
योंहश्र इल्जिः तोइ द खोग्सा इल्जः।
दड. दोरे किदपोरड. बड.जिरे।
दोउ ककह् रही रिड. तोई।
अउं घड़ि अन्दा दु चूड्ड कचड. पिचद् त दड. दोइ गर्फि–घीतो सग् थशःतो।
दोइ एनोः पदगरःतु बिचड. इदिवि अतः कुचे रहुकःतो भेइ दि चि शुः।
दोइ कुतोः भइ केनोः न्वा अन्जः दड. केनोः बाह्ज़े योन्दरः लहतो छेरि कुचे दु श्चिडि. खोग्शःतो।
दिरिड. दोइ मथस कन्जःतो दड. चूडु. तोड्.खः इबि माह्थोचः।
पर दोउ बाह् धक्तेः अन्जे दु ठगेक्ट्रि ठाहरेक्शिद।

गरीब मठा

थिना थिना थिया, बुआ बूई थिया, तेने बड़ी गरीब थी। दोतेई खाया तो पचातिर नहीं। पचाति खाया ता दोते नही। तेनोग थिया एक मठा टशी के एक जा बोलिया तेनी मठे, आमा–आमा बोलिया सं अऊ हाउं सऊ देगऊ। से मठा चलता गया। गाने–गाने एक देश छोड़ी दुसरी देश अपरिया। तेठी थिया एक सेठ तेसे सेठांग परगारा बेठा। बेशना बेशना त्राई वरिये वेठा त्राई वरिये त्राई पेरू त्राई पचि़टुसा चाऊ। से मठा त्राई वरिये त्राई पेरू त्राई पचे़टेस चाऊ लेयी आया।

आदवता आपरिया त्राई ज़ेन चोर टकरियां। तेने त्राई चो़रिये लुटि लेईअन। मठा शुना शुना घर आईया रोलाआ आईया। घरा आपरियां या दुई बुए बुए बुऐन। न कामा बट्ठी असे। न हनि बट्टे आसे च़ तेने मठे बोलिया। आमा व हाऊ त्राई बार सेठा, पारगीर बैठी थी। त्राई पेर त्राई पचिटु चाऊं वजवा देथी। से भी आदवता आपरी आपरी त्राई चो़र टकरूएं तेने लुटि लेईए। हवे वोलियां आमा आमा हाऊं कि करूं। चा़थे बोलियां फिरी गा बोलियां साऊ दे फ़िरी तेसी सेठा गया मठा, फिरी बोलियां मलिक हाऊं नौकर वेश बोलिया।

त्राई वरि फिरी नौकरी किथा त्राई गोवा दिता। त्राई गोवा वन अन्न दिता। चे़चि़ मठा तेठींग आया आये ते सेठी वोलिया हेवे वोलिया फिर ला फिर ला माएं वोलिया कि करूं सेठ जी वोलिए त्राई फेरू त्राई पचे़टु चाऊं आदवाता आपरे कू वोलिया त्राई चोर हथुए तेने वोलिया लुटि लेईगे। सेठा वोलना, चलो वोलना। ऐवे ते मेई तुरे त्राई गोए त्राई वन अन दिता। हेवे वोलियां तू वापिस मही। अच्छी ते मठा ञिस ठारंग आगरांग तेरू चोरि अथे। फिरी आ राथी। त्राई चोर होर आन तेने त्राई वन अन जाई गोए चो़रि लिए गये। मठा फिरी शुनः बुआ है भगवान कि करूं हाऊं। चे़ रोहला रोहला धरि आया। तेठि अगली आई एक तिथ हथुआ। तेस तिथा काछा वेशि रोला रोला बैठा। एक जा तैस तिथांग एक शुका गोवा शुका माहुं गोवा पलाईनि निथा। तेने वोलिए है मनुका तुरे खि दुख बुआ। तेने मठी वोलिया तेसरे ज़वाव दिया त्राई वरि सेठांग पारगरी किया वोलिया। त्राई पेरू दिथी। तेने त्राई पेरू चोरि लुटि लेईया। दोवारा खे गया सेठ कचांग है महाराजा आऊं फिरी तुखिंग पारागरा वेशुग। त्राई वारि फिरी पारगीर किथा। त्राई गोवा त्राई वन अन्न दिथी। से फिरी आदवता अपरि फिरी त्राई चोरिए लुटि लेईए। तो हवे हाऊं कि करूं। हाऊं गरीब घरा वोहूं। अच्छा वोलिए माहू तेने माहु तुरू वुलुआ हाऊं एक कुतरी दिथाग। से कुतरी लेई आया तब वोलिए गान गान ई कुतरी कि करूं वो चेई माचे़री वोलिया। च़ कुतरी लेई धरा आया। धरा आया ता अन्दर अपरियां, तांस पाव दुई मरी तियार थियरे वोसे। चे़ मठा रोहला वेशा। तेने इक कुतरी पालड़ दिता। सेठो गाठे रांई वनी गई। च़ वोलिया तेनि रांई वोलिया रोलि कि करना। तेसे तिथां गच्छागा, तेथि रोहल अ मठा चलता गया तिथा गच्छा रोहली। शुका गोवा शुका मांहु। है मनुका तुरे कि दुख बोआ। मेरे या–वा बुएं बुएं मरी तैयार अस्से। तेसरे त्राई चो़ई (सेब) दिया वोलिए हां तुस्से या वा वे खन्नी खन्नी करी दि बीस। दुई चो़ई या–वा वे दि विज़। तेने विगे आठ आठ वरियो। छोकरे छोकरी बुईगे। एक चो़ई तेठी एक राजा दिथा। तेस राजा परिवार वे दिथा। तेने आठ आठ वरिए बुईये। चे़ राजे वोलिए ते गरीब मठा बुलेइनिया। कोठि अन्ति वोलईया ते चो़ई। मैं वोला फलाणा तिथ गई अन्ति। राज़े वोलियां तुरे खंगुल दिया पुरे परिवार आयो। परिवार उठी गया चलते गए राजे गई।

राजा हैरान परेशान बुईया। राजा वोलना भई तैसी मठयरे वोलना ई रांई कोठे अन्ति। ते फलाणा तिथाग अन्ति। राज़ा वोलू रांई मर दे। मठा वोलिया हाऊं न देऊ रांई। राज़ा वोलिया रांई न देऊ सईथ लड़ाई लगा।
वुलिया तेस मठी कि या–वा दी विजी मठा लड़ाई राजा साथे। कोठे लडियां। राई वोलिया। हाऊं नहीं गाऊं। मेरे या–वा इस गरीब घरां वसा री वो। राजा साथे लड़ाई के रा लाड़ ले। अम सयोगं फौज नही। तेसरे जबाव दिया रांई। फौज हाचिन चि़न माकर। फौज मेरे घर आया। तेस मठाग वोलया ते नी रांई दोवारा़ गा वालिया तिथा गच्छां, रोल वोला तेठी गांई। शुका मनुका एक डव्वा देल वोलियां। डव्वा उगे मेथेई अन्नः मठा तिथा गच्छा गई रोहला बैठा शुका माउं शुका गोवा दोवारा निथा। है मनुका कि खरी खोठी वोआ वोला मेरी रांई राजा खोलाई निनाः नेता साथे लड़ाई लड़ दे वोलना मुकिंग फौज नहीं। वोला फौज हाऊं देहू। डिब्बा दिथा एक मठा वोलिए डिव्वा उगेई मिथई नी। आदवता आपीरं एक गऊ पाई वेशि। तेनी मठे चे़इथा इस डिव्वा के अंदर खि चीज़ अस्सीया। डव्वा खोई विधा, पन माछी हाथः ठोल्लू लुथेर। वोलिए कैसे देऊं फौज माछी अस्से। तेने मठे वोलिए इसी गऊरे दे वोलिया। गऊ माछी दियो ठोलू ठोलू दी बुस बुस किथा। तब माछी हाथ खुर त्रुट गयां। दोबारा डव्वे नाल आन मठे डव्वे बंद किया चलता गराया गिया।

घरे वोलिया रांई ओ ओ तीन डव्वा खोई विल्ला क्या। हे वे राजंग फिरी गाह राज़र वेलि भई आज मेरा फौज तैयार नहीं। शुई लाड ले विलिविया। राज़ा तेसरे मान गया घरे आया वापस राई पुछनी भई राजा कि वोलना राजा भई मंजूर आसे, शुई लाड़ ले। अच्छा तु पाई ताचा इन्हें माह ची दोवा दोवाया पाणि वच्चे, मालिश किया तेने माह छी आगम केरी वे रूंटी वुईए और फिरि राज़ाग कच्चे विगा वोल भई तु राज़ा जी आज मेरा फौज तैयार अस्से। राजा मंजूर बुई गया। दिया बारह बजे लड़ी वे। मठा वापस आया गरे। रांई पुछने कि वोलना राज़ा। मठे दिता जवाव भई राज़ा वोलना रात वारह बजे लड़दे। राजा फौज थीए अवेशा मस्त। ई डव्वा लेऐगा हाथा करि तू राजा फौज विच्छ गई डव्वा उगई विस। मठा चलता गया राजा फौज विच्छे गई डव्वा उगई विधा। तेठीएं पनमा छी एक ठोलू हाथा लिओरे महाछि वोलिया कैसी दराडले तेनि मठी वोलिया। जेते वि इस राजागी फौज आसुन ऐने वल्लूजे तवाह करा विज़ वोलिया। माछी गे ऐन भी सैत राजा गी फौजू कप्पा पुटटी। एक ही ठोलू दिया भदे जई मारी विदा। चे़ फिरी तेने मछि। तेस मठे रे पुछिया हेवे किस माज भी वोलिया। तेने मठी वोलिया ऐसे राज़ा ज़ी शावाश हाथी जोड़ियां भइ मुर माफी दिविजी हाऊं यारज़ी किया। तेठिंग रांई तपिंग रे मेपि राई म पिर वोलुई।•

अनुवाद –रन्धीर सिंह मनेपा

रे-मी-लिङ् हि कद्-दु—

क-न मेद्-कन पु-च़्

अनुवादक- डॉ० बनारसी लाल

मि चिग् ल पु-च़् ञि योद् कोग्। ते हि नङ् ने पु-च़् चु-गुन् ख्यि आवा ल ज़ेर-ज़ेर-हि नोग् आवा ख्युहि नोर नङ् ने चि ङहि क-ल योद् दे ङ ल तङ् तोङ्। ते ने ते ख्यि खो-रङ् हि नोर् खो-वग् ञि ल गोद् दे तङ्। ज्यग् मङ्-पो ज्यिग् म-सोङ्, पु-च़् चु-गुन् दे नोर् छग्-मा दुइ-दइ-ते युल् थग् रिङ् ज्यिग् ल लङ् सोङ् सोङ् हि नोग्। ते रु फङ् मेद् ल ज्यग् पुद् दे खो रङ्हि नोर छ़र तङ् तङ् हि नोग्। नम ज्यिग खो ख्यि छ़ग्-म छ़र ते-ज़-न युल् दे रु छर्-छु म-योङ् दे स-कम सोङ्। खो च़ङ् कन् ल ग्युर। ते-ज़-न खो ते युल्हि मि जङ् पो ज्यिग् गि च़-रु सोङ् दे दद्। ते-ख्यि खो-ल खो-रङ् हि ज्यिङ्-ला फग् चोय्-या-ला तङ्। खोहि सम ङ ङ रङ् हि ट्रोद् प चि ज्यिग् फग्हि ज़-चे यिन् ते दङ् ञम् पो कङ्-यिन्। यिन् न यङ् खो ला सुख्यि क्यङ् चिहङ् म तङ्। ते ने खो ला सम लो खोर् ङहि आवा-हि च़-रु ज़-चे इ-जुग् मङ्-पो योङ् चेन योग् पो च़म ज्यिग् गि ट्रोद् प कङ् दे यङ् लग्-म लुइ-चेन्। ङ तोग्-रि ख्यि शि-चे।

ङ लङ्-यिन् आवा-हि च़-रु सोङ् दे इ-ज़ेर-यिन्, आवा ङ ख्यि कोन-चोग् म-तेन। ख्युहि दुन्-दु दिग्-प चे। ङ ख्युहि पु-च़् ज़ेर-चे मि-छोग्। ङ ख्योद्-रङ्-हि योग्-पो चोग्-से चे-ते पोर्। ते ने खो लङ् दे खो-रङ् हि आवा-हि च़-रु सोङ्। खो थग्-रिङ् ज़म् ज्यिग् ला योद् ज़-न खो-हि आवा योङ् दे खो ला ट्रिल तङ् । पु-च़् ख्यि ज़ेर आवा ङ ख्यि कोन्-चोग् दङ् ख्युहि दुन-दु दिग्-प चे, ख्युहि पु-च़् ज़ेर् मि छोग्। आवा दे ख्यि योग्-पो ज्यिग् ला ज़ेर, इ-ला ग्य-ला ग्य-ला कोन्-चे कोन्, सुर्-दुब् दङ् कङ्-प-ल क़फ़्शा कोन्। ड्रुल-नि ओखग् छ़ग्-मा [ज़ोम दे] ज़-चे ज़-यिन्, कद्-च शद्-दिन्। चि ला ज़ेर् ना ङहि इ पु-च़् दे शि-खन् चोग्-से यिन्। द लोग् दे सोन्-खन् यिन्। क्यल् सोङ् फन् द लोग् ते थोब्। ते ने खो-वग् क्यिद् पो दङ् ञम्-पो दद्।

खोहि आचो दे ज्यिङ् ला योद् कोग्। लोग् ज़-न नम् ज्यिग् खो खङ् पहि चद्-दु लेब, ते-ज़-न खो ख्यि से-चे दङ् लु (गीता) तङ् चेहि कद् छोर्। खो-ख्यि खो-रङ्हि योग्-पो ज्यिग् ल कद् ज़ब ते ड्रि, यि चि नोग्। खो-ख्यि ज़ेर ख्युहि नोअ योङ् फग्। ख्युहि आवा-ख्यि ज़ोम-स तङ् फग्, चि ल ज़ेर् न खो सोन् पो थोब्। ते ल खो म-थद्-दे खङ् पहि नङ् ल छ-जिन् म-योङ्। यिन् न-यङ् खोहि आवा फि ला योङ् दे खो ला लोग् सम् तङ् चुग्। खो ख्यि आवा ला लन तङ्। तोइ-नि ङ ख्यि लो इ-ज़म ने ख्योद् तइ योद्, चि-ज़ेर कन् दे ञन् योद्, ङ रङ्हि या-तोऊँ ञम् पो दद् चे ल ख्योद् ख्यि ङ ला लु-गु ज्यिग् यङ् म-तङ्। ख्युहि इ पु-च़ नि क-न-मेद् कन् मिऊँ ञम् पो दद् दे ख्युहि नोर् ज़ोइ। खो इ-रु लेब् चे दङ् ञम् पो ख्योद् ख्यि खुइ फि-ला ज़ोम-स ग्य-ला ज्यिग् तङ्। आवा ख्यि खो ल ज़ेर पु-च़ ख्योद् नि चप-चरे ङ् ञम-पो दद्-दे नोग्। चि ज्यिग् ङहि यिन् ते छ़ग-मा ख्युहि-नोग्। इ नि थद्-चे ज्यिग् नोग्' चि-ल ज़ेर् न इ ख्युहि नोअ शि-छ-खन् चोग्-से यिन्। लोग्-दे सोन-दे नोग्। क्यल्-सोङ्-खन यिन लोग् -दे थोब् कन् नोग्।

*

ཕུ་ནེན་སྐྱིད་ལ།

མ་རབ་བུ་ཙོ་ཏེ༎

ཨ་ལྷ་ཏེ་ཀེའི་ནེས་པེ་སུ་ཙོ་ཏའི་ཏེན་ཧེ། ཞེ་མ་ཏེ་ཕེ་ཙོ་ཙུག་བུ་ཙོ་ཧི་ཨ་ལྷ་རེག་ལོད་ཏ། ཨ་ལྷ་! ཨེ་ནེའི་པཝན་རེག་ཙེ་ཀྱི་རེག་ཨེ་ཙེག་ར་མེ་ཙནེ་ཚང་འི་དཙུ་ཐིར་ལོད་ཏ། བུ་ཙོ་ཨབ་ཏོག་མ་གྲུག་ས་ནང་ཨ་ལྷ་ཐེ་རེ་ཨེན་ཧིའི་པཝན་བུ་ཙོ་ནེས་པེར་ཏོག་ཏན་ཏུ་ལེག་ཞེ་ཚོར་ཞེ་དལྷ། ནེའི་ཏེ་མས་ཀྲུ་ཕེ་ཙོ་ཙུག་བུ་ཙོ་ཧི་ཨེན་ཧིའི་པཝན་ཚུ་ཏའི་ཀུ་རེ་ཙེ་ཡུལ་ལྷ་རེ་ཏེ་མང་འེལ་ཧེ་ཐེར་ཏ། ཐ་ཐུང་རེ་ཕལ་ཕེས་ཏན་ཏར་ག་ཞོད་ཙེ། ཏ་ལྷ་ཚང་འི་ལོམ་ཐེར་ཏ། ནེའི་ས་ཏོག་ཐ་ཐུ་ཡུལ་ཏོག་ཨང་ཀུལ་ཙོག་ཀི་འེལ་ཞེ། བུ་ཙོ་རེ་ཙང་ཞེ་འེལ་ཞེ། ཏལ་ཐ་མེན་ཀྱི་ནེན་ཐེག་ཐ་ཐུང་ཙུག་སུ་ཡུག་པོ་ཏེ་ཀེའི་ཐུང་ཡོག་པོ་ཧིད་ཙེ། ཐ་ཐུ་མི་ཐེ་ཏལ་ཏོག་ཕག་རེ་འག་དེ་ད་ཏ། བུ་ཙོ་ཧི་ཏེད་ཙེ་ཕག་ཏོག་ཁ་ཐ་མེན་ད་ཀི་ཙུག་ཙེ་འེང་ཀྱི་འེ་རེ་དན་པེན་ཀྱི་ཏ་ཏེད་ཙེ། ཐ་ཐུ་ཡོན་དག་ཙེ་ཏལ་ཏོག་ཁེར་ཁར་མ་ད་ཏུ། ཐུ་ནང་ཏལ་ཏེད་ཙེ་ཀྱིའི་ཨ་ལྷའི་ཐུང་ཐེན་ཙུག་ཏེ་ཐ་མེན་ར་འི་ནེ་ཨེ་ཙེག་ཡོག་པོ་ནོ་འའི་ཙུག་ཚང་འི་གོ་འས་མེན་ཐ་མེན་ཐ་ཙེ་རེ་ལྷག་མ་ལུ་སེ་ནོ། དཀྱེ་ནེ་ཁྱུག་ཁེ་རེས་ཏོག་ཀི་ཙུ་མ་དེ་ཏེད་ཙེ༎

དཀྱེ་ཏས་ཀི་ཁྲུམ་ཨ་ལྷ་ག་ཙང་འེ་གོག་ལྷ་ལོ་ཀྱུ་ཏ་:- ཨ་ལྷ་ཀྱི་ཨེ་ནེའི་ཏུ་ཏུ་མང་ཨབ་ཏོག་མ་གྲུག་ཀི་ཐན་ཏར་ལེན་མ་རའི་ལེག་ཀྱི་ཐ། ཀྱི་ཨེ་ནེའི་བུ་ཙོ་ལོ་ཙ་ཕེའི་མ་ཏྲ། ཏཀྱི་རེག་ཨེ་ནེ་ཐུང་ཡོག་པོ་སྒྲོན་པ་ལེག་ཞེ་རེ་ཡོག་ཀུ་ལོད་ཀྱུ་ཏ་ཏེད་ཙེ། ཐུ་ནང་ཏལ་ཏས་ཀི་ཁྲུམ་ཨ་ལྷ་ག་ཙང་ར་ཞེ། ཨ་ལྷ་རེག་ཙེ་ལྷ་འི་འེས་ཏེ་ཧིད་ཙེ། ཨ་ལྷ་ཐེ་བུ་ཙོ་ཐང་ཞེ་ཁེ་རེ་ལ་ཀི་ཨེ་ལ་ཞེ། ཨ་ཙུ་ད་ཏ། བུ་ཙོ་ཧི་ལོད་ཏ་ཨ་ལྷ་ཀྱི་ཨེ་ནེའི་ཨབ་ཏོག་མ་གྲུག་ཀི་ཨེ་ནེ་ནང་དགོན་ཙོག་ཀྱི་ཏུ་ཏུ་མང་ལེན་མ་རའི་ལེག་ཀྱི་ཐ། ཀྱི་ཨེ་ནེའི་བུ་ཙོ་ལོ་ཙ་ཕེའི་མ་ཏྲ། ཐ་ཐེག་རེ་ཨ་ལྷ་ཧི་ཡུག་ན་ཡོག་པོ་རེག་ལོད་ཏ་ཐེ་བུ་ཙོ་རེག་ཚང་འི་པས་ཏ་ཨེ་པོ་ཕེས་ཏེ་ཕོ་ར་ཨབ་ཏོག་ལ་སབ་ནང་བང་ཏོག་ཙུག་ས་རེ་ཨེ་པོ་ཏེ་ཙུག། ལྷ་ཐུང་ཙེ་མི་ཧིག་ཨབ་གས་ཏག་ཐ་མེན་ཏུང་མེན་ཁྲིགས་ཨེ་རང་ཏེམ་རེལ་ལེག་ག་ཐེག་ལོད་ཏ། ཁ་ལག་རེང་ནང་ཀྱི་འི་བུ་ཚ་ཀི་ཙེ་

ཞེན་ཛ་ ཏབ་ཤི་རའི་སྤྲོ་པ་ཡེན། ཏབ་ཤི་སོན་ནི་ཡེན། ཡོད་ཆེ་ཞེན་ཛ་ ཏབ་ཤི་ཁུག་
ཤི་ཡེན། ནུང་ཆེ་བུ་ཙ་རོག ཏབ་ཤི་ སྐྱིད་པོ་ཀྲུའི་ཡེན་ལེ།

ནུབ་ཀྲུག་བུ་ཙའི་ཨ་ཅེ་ རིག་མང་ལེན་ད་ ཨེལ་ལེ་ནེའི་ཡེན་ལེ། ཀྲུ་མ་
མང་རྣལ་དེག ཀྲུམ་ཀ་ཙང་ལེབ་ལེ་ ལ་ལ་ཐེར་ཆེ་ནང་ ཀྱོར་རེའི་སྐད་དེན་དུ། དུལ་
ཏྲེ་ཡོག་པོ་དེ་གོག་སྟུ་ད། ཐེ་ཁ་ལེག་ཙག ཡོག་པོ་ཛི་ཐན་ ཨེ་ནེའི་སེད་ ཏབ་ཤི་
རཞེ་ནི་ སོན་པོ་ཁུག་ཆེ་སབ་ནང་ ཨ་ལྷ་ཐད་ཆེ་ མི་ལོག་ཏྲ་ཞེན་ཕུང་མེན་ད་ལེ་ ཏད་
མོ་ཙོར་ལེག་ཀག་ཡོད་དུ། ཨ་ཅོམ་ཐད་ཆེ་ ཐེང་མང་མ་ཡུ་ཛེད་ཆེ། ཨ་ལྷ་པེ་
ལག་སྐད་ཤི་ བུ་ཙ་ཙོལ་ལེ་ཐེང་མང་རེད་དུ། བུ་ཙ་ཏྲི་ཡོད་ད་ ཨ་ལྷ་ཨེ་ནེ་ཏྲི་
ཀན་ ཀྱི་ཨེ་ནེའི་ཏེལ་ནང་ཀྲུ་མའི་སོན་ཐིག་ལེན་ལེག་ཀ་ཀྲུང་ཀ་ནེ་ཨུ། ཨེ་ནེའི་
ཡོ་ཤི་ཚུག་ལེག་ཙེག ཀྱི་རོག་ད་ཨེ་ནེ་ཏྲི་ཨེ་ཀ་རེ་ ཀ་ཀ་ཙེ་དེ་རེ་མ་དུ་ཙྪ། ཀྱི་
ནེ་འདང་ཀྱིའི་ཡ་དེ་ཨ་པོ་ཚུག་ཤི་མཉམ་པོ་ཀྲུང་ཀ་འཛེད་གེག ཨེ་ནེའི་ཐེ་བུ་ཙ་ནེ་མ་རབ་
ཤི་མཉམ་པོ་ཀྲུང་ཀ་ཛེད་ཆེ་ཨེ་ནེའི་དྲ་ལྷ་ཚང་འི་གོག་ཏྲ། ཐ་ཛོག་རེ་ཨེ་ནེ་ཛི་ཏལ་ར་
ནང་མཉམ་པོ་ ཏའི་སོན་ཐིག ཏྲ་མེན་ཕུང་མེན་ ཏད་མོ་ཙོར་ ལེག་ཙར་ཡོད་དུ།
ཨ་ལྷ་ཛི་ཡོད་ད་:- ཨ་བུ་ཙ་ ཏན་ཀྱི་མཉམ་པོ་ ཛེ་རིག་ཡེན་ལེ། གེའི་ཁ་ཏའི་ཚུག་
ཉ་མཚང་འི་ ཏང་འི་ཡེན་ལེ། ཐན་ཀྱི་རོག་ཛོན་ཏ་ཐབ་རྣ་རེ། ཁ་ལག་རེང་ནང་ཐེ་ཏང་འི་
སེད་ ཤི་ཆེ་སྤྲོ་པ་ཞེན་ཛ། ཡེན་ནང་རེ་ ཐན་ཏབ་ཤི་སོན་ཆེ་རའི་ཡེན་ལེ། ཡོད་ཆེ་ཞེན་
ཛ་ ཏབ་ཤི་ཁུག་ས། ཐད་ས་རྣ་རེ་ཡོད་དུ།།

སྦྱི་དེ་ཡུལ་གྱི་ཞིང་ལས་གླུ།

སྦྱི་དེ་ཞིང་པ་སོ་ནམ་གྱི་ལས་ཀ་མགོ་ཚུགས་འཇུག་སྐྱིད་
སྐབས། འཇིག་རྟེན་ཡལ་སྐད་ཐོག་ཞེར་ལུགས།

སྐྱོབ་(སྐྱབ)ཅིག་མགོན་ཅིག་མི་རོགས་མེད་པའི་ལྷ་རོགས་
ལྷ་རོགས་དཔུང་(སྤུང་)པ་གཡས་པ་གསལ་ཅིག།
གདུར་(འདུར)དུ་ཞེན་ཚོད་གསལ་པ་ཅིག། ཆབ་ཏུ་ལྷང་ཐང་གསལ་པ་ཅིག།
ཟེར་རྡོད་(བརྗོད)ལ་གསལ་པ་ཅིག། ལག་པ་སྨད་ལ་གསལ་པ་ཅིག།

II. སྒོ་བར་ཟེར་པའི་མི། ཤོད་པ་འགྲུངས་(འགྲུངས)པའི་མི།
མི་ལམ་པ་མི་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཆུ་ལྷར་ཁའི་རི་ལ་སོང་ཞིག།

III. ཤར་གྱི་ཕྱོགས་ན་གཡང་ཁུག། ཤར་ཏོ་འཛམ་ཉི་མའི་གཡང་ཁུག།
ལྷོ་རི་ཕྱོགས་ན་གཡང་ཁུག། ལྷོ་འབྲུ་ཟླ་(ན)འཛོམ་པོའི་གཡང་ཁུག།
ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ན་གཡང་ཁུག། ནུབ་སྨན་ཟླ་(ན)འཛོམ་པོའི་གཡང་ཁུག།
བྱང་གི་ཕྱོགས་ན་གཡང་ཁུག། བྱང་རྩྭ་བལ་འཛོམ་པོའི་གཡང་ཁུག།
གཉིས་དུ་སྤྲལ་མགོ་ཡི་གཡང་ཁུག། སོ་ཕ་མཐུག་(འཐུག)རྣམ་(སྣམ)གྱི…།
སྲིན་མ་ནག་ཀྲུང་གི་གཡང་ཁུག། གཡུངས་དཀར་དམར་སྟོབས་ལ་གྱི….།
མོ་སྨན་མི་ཡི་མི་གཡང་ཁུག། ཞི་བྱིང་རྣ་ཡི་རྣ་…།
གཡང་དཀར་ལུག་གི་ལུག་གཡང་ཁུག། ཁྱིམས་རང་ཞེན་སྐྱེངས་རང་མར།
འདི་ཞེན་ལྷ་སར་མན། སྦྱི་དེ་ཡུང་པའི་འབྲུ་གཡང་འདིར་ཁུག་ཅིག།

IV. རྩོ་དང་འབྲུ་གཉིས་སོ་སོར་སྤྱི་བའི་སྐབས་སུ་ཏ་ཐོང་
སོགས་སེམས་ཅན་བཅུ་ཡར་མར་བང་གྲིགས་ནས་ཞེར་
ལུགས་ནི་འདི་ལྟར་རོ།།

ཙོ་ལོ་ ཙོ་ལོ་ ཙོ་ལོ། ཙོ་ལོ། ཙོ་ལོ་ཚིག་དང་ཨ་ཨ་ཡ།
ཨ་མའི་མཁའ་དུ་སྐོར་རོ་རོ། རྫོ་རོབ་ཚིག་རྫོ་རོབ་ཚིག།
རྫོ་རོབའི་ཚིག་དང་རྫོ་རོབ་ཚིག། སྤྲེ་མ་སྐམ་པོ་ཀླུ་རང་འདྲ།
ཀྲུར་བཞི་པོ་ལྕུགས་རང་འདྲ། ལྕུགས་རག་པོའི་ལྕུགས་སྐྱིད་སེང་སེ་སེང་།
ཙོ་ལོ་ཚིག་དང་ཨ་ཨ་ཡ། མ་མའི་མཁའ་དུ་སྐོར་རོ་རོ།
ཞིབ་དུ་ལུ་ལུ་དུ་ལུ་ལུ། འཇམ་འཁྲུལ་ལ་འཁྲུ་ལ་ལ།
ཞིབ་ཁ་མི་འདུག་དུལ་ནི་དཀར་དུལ་ནི་དཀར།
འཇམ་ཁ་མི་འདུག་འཁྲུལ་ནི་དཀར།
ཞིབ་པོ་མི་འདུག་སེང་གེ་འདུག །འཁོགས་སེ་འགྲོ་ནི་ཞིབ་སེ་དུལ།
ཙོ་ལོ་ཚིག་དང་ཨ་ཨ་ཡ། མ་མའི་མཁའ་དུ་སྐོར་རོ་རོ།
ཐང་ཆེན་ཐང་ལ་ཀྱེ་རེ་རེ། ཐང་ཆུང་ཐང་ལ་ཁུ་རུ་རུ།
སྔོན་མོའི་ནས་ལ་སྲུག་སེ་འབུངས།
ཙོ་ལོ་ཚིག་དང་ཨ་ཨ་ཡ། མ་མའི་མཁའ་དུ་སྐོར་རོ་རོ།

V. གདན་ལ་བཞུགས་གདན་ལ་བཞུགས།
ཨ་ཨ་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་གདན་ལ་བཞུགས།

VI. གདན་ལ་ཕེབས། གདན་ལ་ཕེབས།
ཨ་ཨ་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་གདན་ལ་ཕེབས།

VII. ཨ་ཨ་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཁྲིལ་གསུམ་སྐོར་རོ་རོ།
ཁྲིལ་གསུམ་ཨ་ནི་འགྲོ་དགོས་མེད།

VIII. འོངས་མ་བྲུས་འོངས་པོར།
ཨ་ཨ་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་འོངས་མ་བྲུས་འོངས་པོར།
ས་མཆོག་ཀ་ཀྱི་ཞེ་པོང་དུ། འོངས་མ་བྲུས་འོངས་པོར།

མིག་མོ་གཉིས་ཀས་ཞུང་ཁྱིལ་འདུ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར།
སྐྱ་མོ་ཟངས་དང་བྱུས་འདུ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོང་པ་པོར།
ཕྱུག་པོར་གཡང་པོར།། །
ཁ་མོ་པདྨ་བྱུས་འདུ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར། ཕྱུག་པོར་... །
ཟེ་ཡ་ལབ་རྩེ་སྐྱོངས་འདུ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར། ཕྱུག་པོར༔
སྟེ་མ་ཐུ་རིག་ཚལ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར།
ལུས་པོ་འཛོམ་གདང་ཤ་བཞི་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར།
ལྷགས་ཀྱི་ར་བོ་རྩེ་རུ། འོངས་མ་སྨྲས་འོངས་པོར།
ཕྱུག་པོར་གཡང་པོར།

IX. ལྷུང་ལ་རྟེན་ནས་ནས་ཕྱུག་མ་འབད་པའི་སྐྱབས་སྐྱུ་
དབྱིངས་འདི་སྐར་ཞེར་རོ།
ཀུ་རུ་རུ་ཀུ་རུ་རུ། འོངས་ལ་སྐྱོད་འོངས་ལ་སྐྱོད།
འོངས་ཀྱི་བདག་པོ་འཛམ་དཔལ་ལ། དེ་རིང་འདི་རུ་འོངས་ལ་སྐྱོད།
ཤར་རྡོ་རྗེ་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། ཤར་གྱི་ཕྱོགས་སུ་མ་བཞུགས་ཅིག།
དེ་རིང་འདི་རུ་འོངས་ལ་སྐྱོད། འོངས་ལྷ་འཁོར་པོ་བསྐུམ་ལ་སྐྱོད།
ལྷོ་རིན་ཆེན་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་སུ་མ་བཞུགས་ཅིག།
དེ་རིང་འདི་རུ་འོངས་ལ་སྐྱོད། འོངས་ལྷ་འཁོར་པོ་བསྐུམས་ལ་སྐྱོད།
ནུབ་པདྨ་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། ནུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་སུ་མ་བཞུགས་ཅིག།
དེ་རིང་འདི་རུ་འོངས་ལ་སྐྱོད། འོངས་ལྷ་འཁོར་པོ་བསྐུམས་ལ་སྐྱོད།
བྱང་ལས་ཀར་རེ་ཏ་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། བྱང་གི་ཕྱོ་ཏ་སུ་མ་བཞུགས་ཅིག།
དེ་རིང་འདི་རུ་འོངས་ལ་སྐྱོད། འོངས་ལྷ་འཁོར་པོ་བསྐུམས་ལ་སྐྱོད།
དབུས་བུདྡྷ་རེ་ཏ་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། དབུས་ཀྱི་ཕྱོགས་སུ་མ་བཞུགས་ཅིག།

དེ་རིང་འདི་རུ་འཛོམས་ལ་སྐྱིད། འཛོམས་ལྷ་འཁོར་པོ་བསྐུལ་ལ་སྐྱིད།
ལྷ་ལུང་དཔལ་གྱི་དགོན་པ་ན། ཁྱིམ་མེར་ཁྱུང་གི་བང་མཛོད་ཡོད།
དེ་རུ་མ་བཞུགས་འཛོམས་ལ་སྐྱིད། དེ་རིང་འདི་རུ་འཛོམས་ལ་སྐྱིད།
མེར་མེར་མེར་ཁྱུང་མ། བོད་ཀྱི་རས་ཕྱུག་འཕང་དུ་སྐྱིད།
རྒྱ་དཀར་ཚོད་པ་མེལ་དུ་སྐྱིད། ཞུང་ཞང་ངར་སྐྱབས་དུ་སྐྱིད།
བཟང་མོ་བཟང་ལ་སྒྲོན་མེ་སྒྲོན། སྒྲོན་པ་གསུམ་དུ་གཡབ་བཟང་སྐྱིད།
ཀུ་རུ་རུ་ཀུ་རུ་རུ། འཛོམས་ལ་སྐྱིད་འཛོམས་ལ་སྐྱིད།
འཛོམས་ཀྱི་བཀྲ་པོ་འཛོམས་ལ་སྐྱིད།
དེ་རིང་འདི་རུ་འཛོམས་ལ་སྐྱིད།
དབྱིལ་རྟག་བཀྲ་ཤིས་སྒོ་མོ་རུ། སྒོར་མོ་འབྱུང་ཆར་བ་འཇོབ།
མཆོད་ཅིག་འབུལ་ཅིག
མཆོ་མ་ཕང་ཚོམ་ཅིག་ཁྱི་ལེ་ལོ།
གངས་དཀར་རྟེ་སེ་ཚོམ་ཅིག་འབུ་རུ་རུ།
དབྱིལ་རྟག་བཀྲ་ཤིས་སྒོ་མོ་རུ་ལྟེམ་སེ་ལྟེམ།།

– ཚོ་དཔང་རྡོ་རྗེ། ལག་རིས།།

दोइ बाहबि लअन रन्दो भेइ खणु गे धों साःल बेह् केनोः टेइल ल्हेइ लेकि तोतोग दड. केनोः कुथिउ भा ल्हतेग दड. गिबि केनेः अपेला इच्छा कुर्चः ल मःरनाः भेइ गे घ्यड.ो सातितड. जोरिगः का।
पर केनोः दि योह् त छोउआ जोःगेमेह्तड. साह बड.ज़ा केनो धनः ज़े केतो।
छन्ने दु अति ध्वां ए केनेः दोउ थल्ज़ि रूठेः खड.गुल रेइनः।
बाहज़े दोबि कुतोः, ए कटूःह कः थक्कन गेरड. बड.ज़िनः, दड. चीह्ए धिर ग्यू तोः दु भते कांह् शुद्।
पर राजी सड. छेरि कुचे दि कांह् न्वा चेह्तु सिए इल्दे।
यहच्छ्वा शिडे. इल्जः।
यहोंञ्चा इल्दे, यहच्छ्वा खोग्सिद्।•

अनुवाद – सतीश कुमार लोप्पा

ཏུ་ཋུ་དོན་མེད་ཞིག་དེ།

མི་ཞིག་ལ་བུ་ཚ་གཉིས་ཡོད་ཀག།   ཁོ་བ་གཉིས་ཀོད་ནང་ནས་མི་བུ་ཚ་ཆུང་ང་དེ་འིས་ཁོ་རང་གྱི་ཨ་པ་ལ་ཟེར་དོག། ཨ་པ་ཧྥུ། ཁྱོ་རང་གྱི་ནོར་ཆ་ལག་ཁ་ནས་ང་ལ་ཐོབ་ལང་བན་ཧྲ་དེ་ང་ལ་བཏོང་བཏོང་། དེ་ནས་ཁོ་འིས་ཁོ་རང་གྱི་ནོར་ཆ་ལག་ཐམས་ཅད་བགོས་དེ་བཏང་བཏང་སོང་།

ཞག་མང་པོ་མ་སོང་ང་ལ་ཏུ་གུ་ཆུང་ངུ་དེ་ནོར་ཐམས་ཅད་བསྡུས་ཏེ་ཁྱུར་དེ་ཡུལ་ཐག་རིང་ཞིག་ལ་ལང་སོང་དོག། དེ་རུ་ཚེ་རི་མེད་ཏ་ལ་ཞག་ཕུད་ཏེན་བསྡད་དེ་ཁོ་རང་གྱི་ནོར་ཐམས་ཅད་ཏུད་དོག། ཁོ་གཅིག་གང་འང་མེད་ཀན་སོང་དེ་ཡོད་ཛན་ཡུལ་དེ་རུ་སྨུ་གེ་ཞིག་བྱུང་དོག། དེ་ནས་ཁོ་གཙང་ཀན་ལང་སོང་དོག། དེ་ནས་ཁོ་ཡུལ་དེ་འི་མི་རྒྱལ་ལ་ཞིག་ཡོད་ས་རུ་བསྡད་སོང་། ཁོ་འིས་ཁོ་ལ་རང་གེ་ཞིང་ཀ་རུ་ཕག་ཚོ་འ་བཏང་སོང་། ཁོའི་བསམ་མ་ལ་ངས་འི་ཕག་ཀུན་གྱི་ཟ་ལང་དེ་ཟ་ཁྱུད་ཅེ་སོང་བན། དེ་ནས་འང་ཁོ་ལ་སུ་འིས་འང་ཅིག་གང་འང་བཏང་ང་མི་ནུག།
དེ་ནས་ཁོ་ལ་འོག་བསམ་ཞིག་བྱུང་དོག། ངའི་ཨ་པ་ཡོད་ས་རུ་འི་ཟམ་མ་འོག་"པོ་རོ་ཏེ་ཡོང་ཅེན། ལས་པ་ཚམ་ཞིག་ཡོད་ཀན་ཐམས་ཅད་གྲོད་པ་བཀྲངས་དེ་ཟ་ཅེན། དེ་ནེའང་ལུས་ཤེན། ང་འི་རུ་ཧོག་རེ་ལ་ལུས་དེ་ཤིས་འ་རག
ང་ལང་དེ་ཨ་པ་ཡོད་ས་རུ་སོང་དེ་ཟེར་རེན། ཨ་པ་ཧྥུ། ངས་དཀོན་ཆོག་ལ་འོག་བསམ་མ་བཏང་ཡང་ཁྱོ་རང་ཡོད་ས་རུ་ལ་ཡོག་བཙོས་པེན། ངད་ཁྱོའི་བུ་ཚ་ཟེར་ཁོའ་འ་མེད། ང་ལ་ཁྱོ་རང་གྱི་ལས་པ་ཚོགས་སེ་ཞིག་བཙོས་དེ་ཐོར། དེ་ནས་ཁོ་ལང་དེ་ཁོ་རང་གྱི་ཨ་པ་ཡོད་ས་རུ་བུད་སོང་། ཁོ་ད་རུང་ཏ་ཐག་རིང་ལ་འདུག་པེན། ཁོའི་ཨ་པེ་སི་ཁོ་ལ་ཨོ་བཙོས་སོང་།

བུ་ཚོ་སི་ཟེར་སོང་། ཨ་པ་ངས་དཀོན་ཆོག་ལ་མ་བཀྲོས་པེན། ཡང་ཁྱོ་རང་ཡོད་ས་རུ་ལ་ཡོག་བཙོས་པེན། ང་ཁྱོའི་བུ་ཚ་ཟེར་ཁོ་འ་མེད། དེ་ནས་འང་ཨ་པེ་སི་ཁོ་རང་གྱི་ལ་བོ་ཝུན་ནང་ནས་གཅིག་གཅིག་ལ་ཟེར་སོང་། ཁོ་ལ་ཐམས་ཅད་སང་བདེ་མོ་གོས་ལག་དེ་བཏོང་། ཡང་ལག་པ་ལ་གསུར་དུབ་དང་རྐང་པ་ལ་ཀབ་ཤ་བཏོང་། དེ་ནས་གྲུལ་ཨུ་འོ་ཟ་ཅེ

ཟེ་འིན་ཡང་ད་ཝུ་ལབ་བིན། ཅི་ལ་ཟེར་ན་འི་ཊ་ཀུ་དེ་ཤེས་བསྟད་མཁན་ཚོགས་སེ་ཡོད་ཧེན། དཔོ་ཡང་འོག་དེ་གསོན་དེ་

ཡོད། པོ་གཏོར་སོང་དེ་ཡོད་ཧེན། ད་ཡང་འོག་དེ་ཐོབ་སོང་། དེ་ནས་པོ་བ་སྐྱིད་པོ་བཙོས་འིན་བསྟད་སོང་།

ཁོའི་ཨ་ཙོ་ཞིང་ཀ་ལ་ཡོད་ཀག། ཡོང་ཟན་པོ་ཁང་པེ་གདུན་དེ་རུ་སླེབ་བ་ཅིག་དང་ཁོའི་རྒྱས་ཅེ་དང་གླུ་བཏང་ཅེ་སྐད་ཚོར་

དོག། ཁོའི་སི་པོ་བ་རང་གྱི་ལ་བོ་ཝུན་ནང་ནས་གཅིག་གཅིག་ལ་བོས་དེ་དྲིས་སོང་། འི་ཅི་ཡིན་ནག། ཁོའི་བཤད་སོང་

ཁྱོ་རང་གྱི་ནོ་ཡོད་འདུག། ཡང་ཁྱོ་རང་གྱི་ཨ་བེ་སི་མགྲོན་བཏང་འདུག། ཅི་ལ་ཟེར་ན་པོ་གསོན་པོ་ལ་འོག་དེ་ཡོད་དོག

། དེ་ནས་པོ་མ་འཐད་སོང་། པོ་ལ་ཁང་པེ་ནང་རུ་ཆ་ཅེ་ཁམ་ཞིག་མ་བྱུང་དོག།

དེ་ནས་ཁོའི་ཨ་བ་ཕྱེ་ཏ་ལ་ཡོད་དེ་པོ་བཙོལ་ལ་ལ་ཟུགས་སོང་། ཁོའི་ཨ་བ་ལན་བཏང་སོང་། ང་ལ་ལྟོས་ང་འོ་

འི་ཟམ་ནས་སི་ཕལ་ལ་ཁྱོ་རང་གྱི་ལ་བོ་བཙོ་འ་ཡོད། ཡང་ཁྱོ་རང་གྱི་ཟེར་མཁན་ཚོགས་སེ་བཙོ་འ་ཡོད། ང་ལ་ཁྱོའི་ནམ་

ཞིག་འདང་ལུག་གུ་ཞིག་འདང་མ་བཏང་། ང་རང་གྱི་ཡ་ཧོ་འུན་མཉམ་པོ་སྟུད་ཅེ་ཕྱིལ་ལ། དེ་ནས་ཁྱོའི་འི་བུ་ཙ་དོན་མེད་སི་

ནེ་ཏུ་ཀུ་དོན་མེད་ཝུན་མཉམ་པོ་སྟུད་དེ་ཁྱོ་རང་གྱི་ནོར་ཅ་ལག་གྱུ་མ་ཟིན་ཅེ་བཏང་སོང་། པོ་ཡོང་འོང་མེད་དེ་ཁོའི་ཕྱིལ་

ལ་ཁྱོའི་སི་སྐྱིད་པོ་མགྲོན་བཏང་སོང་།

ཨ་བེ་སི་པོ་ལ་ཟེར་སོང་། བུ་ཙ་ཁྱོད་ཅབ་ཅ་རེ་ང་མཉམ་པོ་སྟུད་ཁག། ང་ལ་ཅི་ཡོད་དེ་ཁྱོའི་ཡིན་ནག། དེ་

ནས་འདང་ང་ལ་བཀའ་རི་རག་ཅི་ལ་ཟེར་ན་ཁྱོའི་འི་ནོ་ཤེས་སོང་མཁན་ཚོགས་སེ་ཡོད་དེན། ཡང་འོག་དེ་གསོན་པོ་ལ་ཡོང་

སོང་། སྟོར་སོང་དེ་ཡོད་ཧེན་ཡང་འོག་དེ་ཐོབ་སོང་།•

अनुवाद – तोबदन

पहेली, लोहार भाषा

अइन्जे मांछि, बैशन्जे रज्जा, गान्जे चोर? छोप्पी कर।

आती बार मक्खी, बैठते समय राजा, जाती बार चोर? बूझो तो जाने।

उत्तर – बर्फ

– करमा

लोकगीत : सुन्नी –भूंकू

सोनी भोटली और भूंकू गद्दी का कथात्मक लोकगीत हिमाचल प्रदेश में काफी प्रसिद्ध है और अनेक क्षेत्रों में प्रचलित है। यह एक घटना पर आधारित है। मूलतः यह कथा लाहुल और चम्बा के भरमौर क्षेत्र से सम्बन्धित है जहां इस कथा के नायिका और नायक के जन्मस्थल हैं । लाहुल और चम्बा में इस गीत की अलग–अलग रचना हुई है और ये रचनाएं अपने अपने क्षेत्र के परिवेश का स्वरूप धारण किए हुए हैं। पांगी में भी अलग से रचना हुई है। गीत के तीनों रूपों में कहानी और पात्र में काफी समानता है। भेद भूंकू के जन्म स्थान की व कुछ और है। हम यहां तीनों स्थानों से प्राप्त गीत के नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं। यह कथा लाहुल और चम्बा के बीच प्राचीन सम्बन्ध का एक चिन्ह है। – सम्पादक।

चम्बा भाषा में

सुन्नी भूंकू – चम्बा में

तिन्दी लगी जातरा हो, भूंकू जातरा जो आंदा हो,
भट्टी टिक्करी रा भूंकू ओ गद्दी जातरा जो आया हो,
लक्कैं बणदा चोला डोरा, काली भोरी दाढ़ी ओ–
बणी–तणी जातरा जो सुन्नी भोटली आई ओ–
हत्थे बणदे टोके ओ सुन्नीए हाखी मंझ कजला ओ–
दन्दा बणदा दन्दासा ओ सुन्नीया । देखणै रा चाओ ओ–
पी ओ पियाई भूंकू गद्दी नचणा लगोरा ओ–
नचदे नचांदे ओ भूंकूए सुन्नी बखा हेरे ओ–
नजरी ने नजर ओ सुन्नीए मलाई ओ–
ढोली जो सन्हाटे आए बज्जेदे ढमाके ओ–
दूहरी फट्ट पायो ओ ढोलियो गद्दी नचणा लगोरा ओ–
बाहर जायो निक्कुओ छुक्कुओ कुत्ते कस जो लगारो ओ–
बाहर हेरा निक्केयो छुक्कुओ बाहर कुण माहणु आया ओ–
लम्बड़ा गदेटा ओ सुन्नीए काली भोरी दाढ़ी ओ–
नीली नीली गातरी सुन्नीए लम्मा झम्मा माहणू ओ–
इतड़ी गल्ल सुणी ओ सुन्नीए सुन्नी बाहरा जो आई ओ–
सुन्नी भोटली बाहरा जो आई गद्दीए पुच्छणा लगी ओ–
कठी रा तू गद्दी ओ माहणूआ के आ तेरा ना ओ–
भट्टी रा मैं गद्दी ओ महणीयें भूंकू मेरा ना ओ–
कठी तेरे घर ओ माहणूआ कठी जो चलो रा ओ–
भट्टी टिक्करी घर ओ महणीये लौहला जो चलो रा ओ–
कठी री तु लौहली ओ महणीये केया तेरा ना ओ–
लौहला री मैं लौहली ओ महणूआ सुन्नी मेरा ना ओ–

भेडां – बकरी रस्ते लायां हुक्का पींदा जायां हो–
अन्दरा जो आयां ओ गद्दीया घड़ी पल बेहा ओ–
मंजा मैं डलहराली ओ गद्दीया हुक्कावो पियाली ओ–
मिठियें मिठियें गल्लें ओ भूंकूआ सुन्नीए लगाया ओ–
सुन्नीए भूंकू ही लाई भूंकूए पाया नाचा ओ–
भूंकूए गद्दीए बंसरी लाई सुन्नीएं पाया नाचा ओ–
नच्ची कुद्दी बैठे ओ भूंकू आ रोटी खाई लैंदा हो–
चटकों चगदी दे उंहगे वो भूकूंआ अन्दरा जो निउआ हो–
तत्ते थोपल सुन्नीए चुंरी गाई रा घीउू ओ,
चूंरी केरा घीउू ओ सुन्नीए कदी वी नी खाउूरा ओ–
खाई–पी चूट्ठी वो लाई भूंकू चलणा लगू ओ–
सुन्नीए भोटलिए गल्ले ओ गल्ले मून्ने पच्च पाई ओ–
सतां ओबरी रे ताले खुड़ाए भूंकू ओवरी मा पउू ओ
दिने दिने भेडू बणान्दी राती जो मनुआ ओ–
लौहला खे री तिन्दिया ओ जातरा लगोरी ओ– •

संकलन – स्वर्ण दीपक रैणा

लाहुल, पट्टन भाषा

सोनी– भुड.कु

भुंकूआ ना गदेटु बलि ए भेड़ा बाकुरी चरूंदे।
ए आधूना रते बलिए सूपूने अए बलिए।
ए चले चालो भेड़ा बकुरी लवे जीरू चरूंदे।
अगे आगे भुंकू ना गदेटु पीछे भेड़ा बकूरी।
एको ना ध्यड़ी बलि ए ब्रामोरा थाड़े।
ए दूजी ना ध्यड़ी बलिए ए नाझाली डेरे।
केलींगा देवी बलिए भागाती दीती।
भागाती दिती बलि ए बाते जूगूती।
त्रीजी ना ध्यड़ी बलिए आल्यासा गोटे।
ए चोउथे ना ध्यड़ी बलिए जोता लंघाए।
ए नीली ना छेलड़ी बलिए देवी भगुवती दीती।
पांजू ना ध्यड़ी बलिए रापे ना आए।
छेयो न ध्यड़ी बलिए घूषेरी ग्रांवें।
ए भुंकू ना गदी बलिए घूषेरी चोउरे।
ए सोनीया ना भोटुड़ि बलिए पान्यारी आए ।
ए सोनीया ना भोटुड़ि बलिए पूछूणे लागी।
ए पखालाना गदेटु बलिए क्या तेरे नावां।

क्या तेरे नवें बलिए ग्रां तेरे काठी।
ग्रां मेरे भीड़ा भांगड़ा नां मेरे भूंकू।
ए अन्दुरू आयो भुंकू गदेटु भंगा तमाकू पीये।
ए अन्दुरू नायो अउणा बलिए सरा सूरे री बासे।
ए अन्दुरू आयो भूंकू गदेटु सरा सूरा नाये ।
ए अन्दुरू आयो भुंकू गदेटु ....।
ए सोनीया न भोटुडि बलिए कीनीरी छेड़।
ए भुंकू आ ना गदी बलि ए नाचा देड़ायें।
ए भुंकूआ ना गदी बलि ए धणू माला बिसूरी।
ए कोणू मीने आए बलिए कोणू मीना पूजी।
ए कती मीने भुये बलिए भुजे पातुरा आए।

नोट :– गीत यहां आकर खत्म हो गया है। यह भी कह सकते हैं कि गायक ने यहां छोड़ दिया। जनश्रुति है कि भुंकू सोनी के साथ भोग विलास में इतना लिप्त हो गया कि सब कुछ भुला बैठा। जब भूज वृक्ष का सूखा पता हवा के साथ अंदर आकर गिरा तब कहीं उसे होश आया कि उसके पास भेड बकरियां भी थी। तब वह उनकी खोजबीन लेने चल पड़ा। तब तक उसके बफादार कुत्ते ने थाच को कुगती जोत तक वापिस पहुंचा दिया था। यह सारा प्रकरण गुशाल, लाहुल में तथा भुंकू के घर में भी नागवार गुज़रा। परिणाम स्वरूप राहगीरों ने दो झूठे संदेश भेजे। भुंकू को कहा गया कि सोनी मर गई है। तथा सोनी को कहा गया कि भुंकू मर गया है। इस दुखद समाचार को सुनकर सोनी ने चन्द्रभागा में कूद कर जान दे दी तथा भुंकू ने अपने वहां दरिया में कूद कर आत्महत्या कर ली। इस तरह इस प्रेम प्रकरराा का दुखान्त हुआ।•

संकलन –सतीश कुमार लोप्पा।

पांगी भाषा

सुन्नी भूंकू

रित खुडदे जे सूरज निधिया धूपे रा केसर खिड़िया।
नदिया रे बन्ने ब्यार नची ग्रतेगा नीली नीली धारा उगया
इन्हां बरफा पर झड़ी चुकी चौदस, धरती रा मुकया पाला।
ब्यारो हटाए पौंगर पते ते मुड़ी करी बगेआ नाला।
सोहणी धरत ते ऊंचे खंखरा बाला भोटल देस
जिते रहियां लंघी पुज्या भूंकू पुहाले रे भेस।

लाल तेरा साफा ओ भौंरा,
मोरे केरी कलगी ओ मोरे केरी कलगी ओ जानी,
बणी बणी पुन्दी ओ चिट्टा तेरा चोला ओ भौंरा,
काला तेरा डोरा ओ भाली भाली खिजी ओ
जानी रोई रोई सिजिओ राविया दे कंडे ओ जानी

मोटरां चलोरी ओ। मोटरां चलो री ओ जानी
रोणका लगो री ओ चम्बे रे चुगाना ओ जानी
बिजली बलोरी ओ मिंजरा लगो री ओ जानी
रौणका लगी री ओ मिंजरा रे मेले ओ जानी
बणी तुणी जाणा ओ।

तिन्दी लगी जातरा, भुंकुए पोहाला नाचोणे लगोरा हो।
नचदे नचांदे भुंकुए पुहाले चंबा अपणे जे मेले हो।
सुन्नी पुछदी भेणा ओ गद्दी कुण नचणे लगोरा हो।
नचदे नचांदे ओ भोटलिए गद्दी पूछणे लगा हो
कठी तेरे घर ओ मित्तरा कठी जो चलूरा ओ।
भटठी टिक्करी घर ओ सुन्निए खरबा जो चलूरा ओ
कुठी मेरे छिकशु री डोर बैरी तां संभाले ओ
भाले मिंजो भाले ओ सुनिए भाले मिंजो भाले ओ।
सुन्नी भोटली मंत्र फुकके ते डाडी कैद बणाई
भुंकू गद्दी रे जन्तर बनही कैद घणा खी पाई।

तत्ती तत्ती खिचड़ी भुंकुआ चूरी केरा घीऊ हो
भालदे निहालदे भुंकू जो छटड़ा महीना लगया हो।
भुंकू बेचारा परबस पैया ते पेस न कोई पुगाई।
रित रित कटी देस बगाने कैद जून पर तांई
नवीं रिते रे चीडू चुम्हारे भुंकु री नींदर जागी
चेते पे सारे पधर पुहाल ते धारे की ब्रीशण लगे।

मैं ता जली इस भुंकुए री अग्गी मैं किजो नैंण बटाए
लोक ता जलदे हिरखे रे मारे मैं कुण पाप कमाए।

चार रण्डा मिली गल बणाई ते इक बसेख बणाया
भुंकुता सुन्निए हुण ना औणा तेरे कन्ने बैर कमाया।
सुन्नी रोंदी छडी ओ भुंकुए तिंदी होई गया पारे हो
जोता पर आई ओ भुंकुए भेडा लाई लारे हो।
भेणी बजोगणों तूं वे केस बजोगे मूई हो
इतनी गल कीति ओ भुंकुए प्राण छडे गंवाई हो
अगली राते री तिंदी जातरे ते समडारे भथ्थे टकराया
दिया ता दिया भोटलियो मेरी सुन्नी रा बसेखा हो
होर ता भुंकुआ राजी बाजी सुन्नी भोटली मूई हो।
उडदे पखेरू आ दित्ती बुझारत बुयां लामलसा
धारा रूले मेरे भेडू ता बकरू मैं सुन्नियां री खातर आया।
सुन्नी सुणी करी सुन्न हुई अते रोई रोई जान गंवाई
कुस जनमे रे करम फूटे अते कुणे जणे पीड घटाई।
भेज दे ओ पुहालुओ भाईयां भरमौर रा सुखसांद हो
होर ता भोटलिए राजी बाजी भुंकू गद्दी मुआ हो।•

स्पिति में कृषि कार्य के समय गाए जाने वाले गीत

लोक साहित्य की दृष्टि से स्पिति अत्यन्त समृद्ध है। अनेकों महत्वपूर्ण सामाजिक, धार्मिक व अन्य अवसरों पर गाए जाने वाले कई गीत यहां मिलते हैं। नीचे पिन घाटी में फसल कटाई के समय गाए जाने वाले कुछ स्थानीय भाषा के गीत दिए जा रहे हैं।

1 खेत में फसल कटाई का काम करते समय इस प्रकार प्रार्थना करते हैं।

हे नाथ, रक्षा करें । सहायता करने वाले आदमी नहीं है। देव, कृपा करके आप ही हमारे काम में मदद दें। दायें बाजू का कपड़ा उपर करें। आगे काम समाप्त होता जाए और पीछे ढेर लगता जाए। दराती उपर करें और बाजू को नीचे करें।

2 दोपहर को भोजन के पश्चात फिर से काम शुरू करते हुए इस प्रकार गाते हैं।

सबने पेट भर कर स्वादिष्ट भोजना खाया है। वे सभी व्यक्ति जो काम में सुस्त हैं और रूचि नहीं रखते हैं, वे सभी नदी के पार पहाड़ पर चले जाएं।

3 जब एक खेत में फसल कटाई समाप्त हो जाती है तब इस प्रकार समृद्धि का आहवान करते हुए गाते हैं।

पूर्व की ओर से समृद्धि का आहवान करते हैं। पूर्व से धूप की समृद्धि का आहवान करते हैं जिसमें न अधिक गर्मी हो न अधिक ठंडक हो।

दक्षिण की ओर से अनाज के विभिन्न प्रजातियों की प्राप्ति की समृद्धि का आहवान करते हैं। उत्तर की ओर से नमक और ऊन की उपलब्धि की समृद्धि का आहवान करते हैं। जौ की बालियां, जिसकी पूंछ छोटी होती है, की समृद्धि का आहवान करते हैं।

काले और छोटे किस्म के मटर की समृद्धि का आहवान करते हैं। सफेद और लाल शलगम की समृद्धि का आहवान करते हैं। नेतृत्व करने वाले प्रमुख जनों की समृद्धि का आहवान करते हैं। गीलिंग नस्ल के घोड़े की समृद्धि का आहवान करते हैं। अच्छे नस्ल के भेड़ों की समृद्धि का आहवान करते हैं। शंगस रंग और पंगस रंग के बीच तथा लरी और ल्होसर तक स्पिति की पूरी घाटी के अनाज की समृद्धि का आहवान हम यहां करते हैं।

4 मंडाई करते समय घोड़े और गधे आदि पशुओं को दौड़ाते समय गाए जाने वाले गीत।

हो –लो –––––! हो–लो याक और म–म (गोलाई में घूमते हुए केन्द्र में रहने वाला पशु) अपने स्थान पर घूमें। याक के पैरों के नीचे दानों पर खुर पड़ते हुए जो–रोब करके आवाज आती है। सूखा फसल नमक की तरह मंडने में आसान हो जाए। तुम्हारे खुर लोहे के खुर के समान हैं। काले लोहे के खुरों से सेंग–सेंग की आवाज आती है। हो–लो ––––––।

अभी और बारीक मंडाई करें। अभी और नर्म मंडाई करें। अभी बारीक नहीं है। इससे और बारीक हो जाए तो अच्छा है। अभी पूरी तरह नर्म नहीं हुआ है। और नर्म करने की आवश्कता है। अभी ठीक से बारीक नहीं हुआ है। मोटा रह गया है। जल्दी दौडेंगे तो बारीक हो जाएगा।
हो – लो ।

सबसे पहले निकले जौ को झाड़ साफ करके ढेर लगाएं। हो – लो।।

5 जब अनाज को पलटी मारने के लिए पशुओं को रोका जाता है, तब इस प्रकार गाते हैं।

आसन पर बैठें। म–म, होंग के राजा, आसन पर बैठें।

6 दोबारा जब घुमाना शुरू करते हैं:
आसन से उठिए। म– म, होंग के राजा आसन से उठिए।

7 मंडाई पूरा करने के बाद पशुओं को खोलने से पहले :–
म–म, होंग के राजा, तीन चक्र और घूमें। तीन चक्र से अधिक घूमने की आवश्यकता नहीं है।

8 अंत में पशुओं से अनुरोध किया जाता है कि उन के विभिन्न अंगों में फंसे हुये दानों को वे यहां झाड़ कर छोड़कर जाएं।

होंग (मंडाई करने का काम और मंडाया हुआ अनाज) को मत छुपाएं, यहां छोड़कर जाएं। म–म, होंग के राजा।

कानों के खोल में, आखों की पुतलियों में, नाक के छिद्र में, पद्म के समान मुख में और मोती की माला के समान पूंछ में होंग मत छुपाएं, होंग को छोड़ कर जाएं। चौकोर और छः फुट लंबे शरीर में होंग न छिपाएं। लोहे के खुरों में होंगे न छिपाएं। समृद्धि यहीं रखें।

9 भूसा और जौ को अलग करते समय भूसा को हवा में उठाते हुए इस प्रकार गाते हैं।

कु रू रू। क रू रू। होंग के लिए आईए। अन्न के देवता मत्र्जुश्री आज यहां होंग में आएं।

पूर्व में वज्रश्रेणी की डाकिनी, पूर्व में न रहें आज यहां होंगे में आएं। होंग के सुंदर देवताओं को साथ में लेकर आएं।

दक्षिण में रत्न श्रेणी की डाकिनीयां, दक्षिण में न रह कर आज यहां होंग में आएं। होंग के सुंदर देवताओं को साथ लेकर आएं।

पश्चिम में पद्म श्रेणी की डाकिनियां, पश्चिम की दिशा में न रह कर आज यहां होंग में आएं। उत्तर में कार्यवान श्रेणी की डाकिनियां उत्तर की दिशा में न रह कर आज यहां होंग में आएं। मध्य में बुद्ध श्रेणी की डाकिनियां, मध्यम में न रह कर आज यहां होंग में आएं।

लह–लुंग के श्री विहार में गृहस्थों और सन्यासियों के लिए वायु की एक कोठड़ी है। वहां न बैठें यहां होंग में आएं। आज यहां होंग में आएं।

सिर–सिर कर के चलने वाली वायु तिब्बत के जौ और भूसा की मात्रा को बढ़ाने आ जाओ। भारत की गर्मी को शीतल बनाने के लिए आएं। जंगथंग के ठंड के प्रहार को कम करने के लिए आओ।

कु रू रू। होंग में आइए। होंग के मालिक होंग में आईए। आज यहां होंग में आएं। मंडाई करने वाले खेत के मंगल द्वार पर प्रथम निकाले गाए अनाज के दानों की वर्षा हो रही है। इसका भेंट है। इसे पूजा मैं कर रहे हैं। अनाज का उत्पादन मानसरोवर के झील तक खिली–ली करके फैला है। और श्वेत पर्वत तीसे (कैलाश) तक बु–रू–रू कर के फैला है। मंडाई करने वाले खेत में अनाज पूरी तरह से भरा पड़ा है।•

–छेवांग दोरजे
हिन्दी अनुवाद– तोबदन

सज़ा का पहला वार सीधा चलने वाले पर

जैसा कि प्रायः सभी जगह है, मेरे आफिस में भी दस बजे हाज़री का समय था। दस बजकर पांच मिनट तक जो कर्मचारी नहीं पहुंच पाता था उसके खाने में रजिस्टर में लाल काटा लग जाता था और हाज़री रजिस्टर दूसरे अधिकारी के पास भेज दिया जाता था। इस नियम का कितनी प्रतिबद्धता से पालन होता था यह चर्चा का विषय नहीं है।

मैं अपनी आदत से आफिस में प्रायः दस बजे से पहले पहुंचता था। लेकिन एक दिन मैं थोड़ी देर से पहुंचा। दस बजकर पांच मिनट होने में अभी एक–दो मिनट थे। देखा अधिकारी ने रजिस्टर खोल कर अपने आगे रखा हुआ है, जैसे कि बाग अपने शिकार पर बैठा हो, और मेरे खाने में लाल काटा लगा हुआ है। जो कर्मचारी अभी तक नहीं आए थे उनके खाने खाली थे। मालूम हुआ कि बड़े साहब के दौरे की चर्चा थी। हमारे साहब ने अपनी कार्य कुशलता दिखाई थी।

–तोबदन

गीत लारन बारन साहब इलाका कुल्लू नग्गर

देखो तमाशा बारन का
लारने बारने कौंसिल किया
किया सिकन्दर की धार।
टोपे टोपे दारू बन्डेया
लम्प (लप्प) भर बोन्डी (बन्डी)
देखो तमाशा.......।

अरे दिया डल्ले दिया धारा,
लोको तमाशा बारन का
थरर थरर (थर थर) भागसू कम्मेआ
नूरपुर कम्मेआ सारा लोको।
देखो तमाशा ....।

जब आए टिक्कर (शायद नगर)
से जिला कांगड़ा हुकम नर्म सारे
राजे को जगड़िया (जगीरा) दी,
देवते की मुआफी बाहल सारी
धन धन साहब लारन बारन की।

लहणा सिंह से कागज लिए
मामला किया कुल्लू सारे का
जिसके रहे हसल (हासल) शाशन (शासन)
जिऊ बन्डे दिए सारे
देखो तमाशा ....।

प्रीतम सिंह पट्टे दिए
बाहल रखे साहब बारन ने
लारन रहिया, इन्तजामान, बारन मोहतमाम
देखो तमाशा ....।

कुल्लू की रैयत गरज रही
धनधन हो री साहबे
सुख दिया दुनिया सारी कुल्लू
देखो तमाशा ....।

दल्ले दी धार पर डफरे बजदे

बिच बिच बज्जे जम्बीर लोको
रोटे पोटे (औने पौने) गोरखिए चल दिए
बिच चल दिए अंग्रेज लोको देखो।

व्याख्या :– उक्त गीत को सी0एच0 डोनाल्ड ने रिकार्ड किया और टी0 ग्राहम वैली, जो भाषाविद थे, ने सम्पादित किया।

इस गीत का घटनास्थल नुरपूर कांगड़ा और कुल्लू है। गीत में वर्णित विषय ऐतिहासिक है और घटना काल तथा कम इस प्रकार है।

अंग्रेजों और सिक्खों के बीच के प्रथम युद्ध के पश्चात सतलुज और रावी के मध्य का क्षेत्र सन 1846 में अंग्रेजों के अधीन हो गया। सन 1848 ई0 में नूरपुर तथा कुछ अन्य राज्य अंग्रेजों के विरोध में खड़े हो गए। नूरपुर के राजा बीर सिंह का वारिस जसबन्त सिंह नाबालिग था। राम सिंह एक बजीर के पुत्र, मुहिम के प्रमुख बने। राम सिंह हार जाने के बाद गुजरात चले गए।

सन 1849 में रामसिंह दो सिख्ख रेजीमेंट के साथ फिर प्रस्तुत हुए और उन्होंने दुल्ले की धार पर अंग्रेजों के विरूद्ध मोर्चा स्थापित किया। यह शिवालिक के क्षेत्र में एक धार का नाम है जो रावी के साथ लगती है तथा शाहपुर से उत्तर पूर्व में स्थित है।

रामसिंह हार गए और पकड़े गए। उन्हें सिंगापुर भेज दिया गया जहां उनकी मृत्यु हो गई।

हिस्ट्री आफ दी पंजाब हिल स्टेट के लेखक लिखते हैं कि उनके समय में भी (सन 1933) रामसिंह की बहादुरी के गीत कांगड़ा क्षेत्र में गाए जाते थे। इस गीत में आए चरित्रों में लारेन संभवतः जे0 लारेंस थे जो कमिशनर थे। बारेन 1847 से 1851 तक कांगड़ा जिला के मुख्य अधिकारी रहे हैं। उसके बाद वे सेटलमैंट आफिसर 1851–52 रहे और उन्होंने इस जिला का प्रथम सैटलमैंट किया।

गीत की भाषा कांगड़ी है।

अनुवाद :–

देखो तमाशा बारन का। लारन और बारन ने सिकन्दर–की–घार पर आपस में सलाह किया। गढ़–गढ़ में बन्दूक की टोपियां और कारतूस बांटे। और थैला भर–भर कर लकडी के टुकडे यानी शौखटे बांटे। दल्ले की धार–के क्षेत्र में बारन ने तमाशा मचाया है। भागसू (धर्मशाला) और नूरपुर का सारा क्षेत्र थर थर कांप रहा है।

फिर वे टिक्कर (शायद नग्गर) आए। यहां उन्होंने कांगड़ा के कानून के नियमों को नर्म और दयावान बनाया। उसने राजा को जागीर दी और देवताओं की मुआफी फिर से शुरू की। धन्य लारन की और बारन साहबों की। उन्होंने लहणा सिंह, सिख आधिकारी, से कागज लिए और सारे कुल्लू का मामला दर्ज किया। उन्होंने अतिरिक्त भूमि को बांट दिया। जो पट्टे राजा प्रीतम सिंह (1767–1805) ने बांटे थे बारन साहिब ने उनको फिर से पूर्वावस्था में बनाए रखा। लारन प्रबंधक थे और बारन देख भाल करने वाले थे। इस प्रकार कुल्लू की रैयत गरज रही है। धन्य हो साहबो। सारे कुल्लू क्षेत्र को आपने सुख दिया। दूल्ले–की–धार में खुशी से डफले और तम्बीरे बज रहे हैं। जैसे कैसे गोरखे चले गए थे। अभी अंग्रेज जाने वाले हैं।•

प्रस्तुती– तोबदन

डी0एस0 देवल द्वारा चम्बा–चुराह घाटी का परिचय

चम्बा जिला में चुराह का क्षेत्र अत्यन्त दूरस्थ व दुर्गम है। यहां का लोकजीवन सरल है और अभी भी काफी सीमा तक यह अपने प्राचीन परिवेश को सुरक्षित रखे हुए है। इसकी भाषा और संस्कृति समृद्ध है। बाहर के लोगों को चुराह के विषय में कम जानकारी है। श्री डी0एस0 देवल की इस विषय पर दो बहुमूल्य रचनाएं 'चुराह घाटी, एक परिचय' (2001) और 'विवाह संदर्भ गीत गालियां' – अभिनन्दनीय हैं।

प्रथम पुस्तक में उन्होंने चुराह का भौगोलिक व ऐतिहासिक परिचय दिया है। इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण स्थल यथा तीसागढ, देवीकोठी, सलूणी आदि का खोजपूर्ण वर्णन दिया है। मंदिरों और उत्सवों का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। पुस्तकें संग्रहणीय है तथा युवा रचनाकारों के लिए प्रेरणापूर्ण हैं। नीचे इन रचनाओं से एक अंश प्रस्तुत है :–

अप्पर चुराह से एक गीत

इक भन्ने बांगलू रे शीशे, दुई मेरी बांह मरोड़ी हो,
जिन्दा हुन्दा रामसिंह राजा, कांसी जो फांसी दिन्दा हो।

भावार्थ :– राजा रामसिंह की मृत्यु के पश्चात, थल्ली में वहां के लोगों ने राजा की खवास भागठू पर हमला कर दिया और महल के शीशे भी तोड़ डाले।

कोणां लगी हो झंडी कोणां लगी हो,
जांदे पटवारी पीछे रोणा लगी हो।

भावार्थ :– बन्दोबस्त के समय पटवारी की तबदीली हो गई और तब पटवारी की प्रेयसी रोने लगी।

अग लगी दुदरे री धारे, नरैणू लाला मारी छडा हो,
दुकाना पुर लगी गे ताड़े, नरैणू लाला मारी छडा हो।

भावार्थ :– दुदरा धार को आग लगे जहां पर नरैणसिंह लाला की निर्मम हत्या की गई और उसकी दुकान में अब ताले लग गए।

चांजूरी चुरैहण मेरे पूरणा, ढेरी लांदी जोजी भला हो
साटणीरी बास्कट पांदी, दिल लैन्दी मोही भला हो।

भावार्थ :– चुराह घाटी की महिला का लिबास और प्रेम प्रसंग।

भाई तेरा ते कौडी रा खिलार निम्मो हो
दोहड़ लाई तू भारा पुर नच्चे निमो हो।

भावार्थ :– कौडी, यहां का प्रसिद्ध खेल है। बाजी जीतने वाले, बाजी हारने वालों पर भार डालते हैं। उन्हें नीचे बिठाकर इनके इर्द गिर्द नाचते हैं।

मेरीए सीकरी दिए धारे, धारे असा फुल चुगने जो जाणा हो
मेरिया धारे–रिया तारेला, त्रेला भला मेरे मोचड़ू हो भला सीजे हो।

भावार्थ :– सीकरी धार में बनफशे के फूल बहुतायात में होते हैं। नवयुवती फूल चुनने को जाती है और प्रेमी से शिकवा भी करती है कि ओस से उसके जूते भीग गए हैं।

भृखू गले टोरच बलोरी हो, आई मामा भाणजे री जोड़ी हो
इक्की मामे हटटी पुर पाला हो, दूए मामे जोता पुर गाला हो।

भावार्थ :– कर्मचन्द नामक एक युवक, जिसे एक मामा ने दुकान पर पाला पोसा तथा दूसरे मामा के साथ अपनी प्रेयसी से मिलने जा रहा था, भृखु धार में उसका देहान्त हो गया।

हाय भला टंडे प्रधाना हो, तिण्डी मौं शउंक चुकाणी हो
नक बढी चटणी बणाणी हो समके सिनवाला खलाणी हो।

भावार्थ :– प्रधान जी की दो बीवियां पहले से ही थी। फिर वे तीसरी को भी लाए। पहले वाली दोनों बीवियों ने मिलकर तीसरी का नाक काट दिया।•

प्रस्तुती–तोबदन

राम लोक – कुछ नए तथ्य

पिछले अंक में हमने राम लोक के विषय कुछ लिखा था। यहां कुछ और तथ्य दे रहे है।

रामू जो नाल्डा के रहने वाले हैं बताते हैं कि वे राम लोक से चार–पांच वर्ष छोटे हैं। वे बताते हैं कि जब राम लोक लगभग पन्द्रह वर्ष का था तो उनके माता पिता का केलांग में देहांत हो गया। तब वह अपने गांव नाल्डा आया। जब वह बाहर पढ़ता था तो वह अपने गांव आता रहता था। सन 1947 के बाद वह चार पांच वर्ष तक घर आता रहा । उसके बाद कुछ वर्षों तक उसके एक भाई को पत्र आते रहे। फिर उसका सम्पर्क समाप्त हो गया और उसके आठ–दस वर्ष बाद उसे मृत मान लिया गया।

वे आगे कहते हैं कि मैट्रिक में मैरिट लिस्ट में उनका नाम था। एक किताब में उनकी फोटो छपी थी जिसमें वे चश्मा लगाए हुए थे। लाहौर में जहां वे रहते थे उसके उपर नूरजहां रहती थी और वह बम्बई जाने की बात भी करता था। एक पत्र में उसनेघर फिर न आने की बात भी कही थी।•

–तोबदन

निरक्षर लेखक कुन्ज़ांग

कुंजांग साधारण ग्रहस्थ व्यक्ति था। उसका जीवन भी ऐसा ही कठोर और संघर्षपूर्ण था जैसे कि लाहुल में प्रायः प्रत्येक कृषक का होता है। परंतु उसने कुछ ज्यादा मेहनत की तथा स्वयं को समाज के लिए अधिक लाभदायक सदस्य बनाने का प्रयत्न किया।

कुन्ज़ांग 1908 में वारी गांव में पैदा हुए। बचपन में वे गांव में भेड़ चराते थे, सर्दियों में मंडी तक भेड़ों को लेकर जाते थे तथा गर्मियों में तिब्बत में व्यापार के लिए भी जाते रहते थे। वे सामाजिक गतिविधियों में विशेष रूप से रूचि लेते थे। वे समाज के एक सक्रिय कार्यकर्ता थे। वे घुरे गाते थे, पुरानी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी रखते थे। बहुत से पारंपरिक लोकगीतों का संग्रह किया, कंठस्थ किया और विवाह आदि अवसरों पर गाकर वातावरण को आनन्दमय बनाया। स्वतंत्रता के पश्चात स्थानीय राजनीति में भी भाग लिया। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी आयु के अंतिम पक्ष में अपनी भाषा पट्टनी (बौद्ध) में कुछ गीतों की, पद्य में, जुबानी रचना की। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है।

एक अंश यहां उद्धृत किया जा रहा है।

ईंचा जूगा छ्रिड.मी ए,
रूठे शूचे तो ञ ए।
सीमी ध्याड़ा ये मी ए
भते रूठे शूचे तो ञी ए।।

अनुवाद

इक जीवन भर का यह जीना
अच्छे से रहिवें।
मरने का दिन जरा याद करो
सब अच्छे भई के रहिवें।•

–सतीश कुमार लोप्पा

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।

–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

घ्याड.ों प्राःदु खेर्बेस शु, भते खेर्बेसतु जलाह!।
घ्यड.ों प्रद ञे मेह, व्यक्पि मशु शुजो टेशि।।

प्रस्तुति व पट्टनी अनुवाद–सतीश कुमार लोप्पा

कविता, पट्टन भाषा

टंगा डब्बाज़े भत्ते धिर चुमज़ी मारछ़ी

ज़िंदगीरींग टंगा–ढब्बाज़े वस–ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर सच्चे खुशी चुमज़ी मारछ़ी।

फेटे शुबीरींग टंगा–ढब्बाज़े मंगे–मंगे विस्तरारे–ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर चैनो ईम चुमज़ी मारछ़ी।

पढीकपीरींग टंगा–ढब्बाज़े जबर–जबर किताबरे – ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर असल ज्ञान चुमज़ी मारछ़ी।

टंगा ढब्बो धालते रूठे–रूठे घड़ीरे–ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर सही वक्त चुमज़ी मारछ़ी।

टंगा–ढब्बा शुई सेईत ग्यांगो फेरे मीरे–ता छोकान लाज़ी तारछ़ी
पर सच्चे साती खोकच़ी मारछ़ी।।

साल्टे शुबीमी थलजे ढब्बो जरियाजे पाटी–पाटी चिजारे–ता
चुमज़ी तारछ़ी।।

पर कुदरतो राशी सलठेपण चुमज़ी मारछ़ी।
पल्लारींग ढब्बा शुई सेईत अन्न–ए–बगत–ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर ओंश चुमज़ी मारछ़ी।

टंगा–ढब्बा शुई सेईत आउषादे–ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर मींउ सियत चुमज़ी मारछ़ी।

टंगा ढब्बाजे रंगी रंगी घरबारारे ता खड़े लाज़ी तारछ़ी।।
पर घरबारो तोंगी शांति–ए–दा चुमज़ी मारछ़ी।
मीजे ढब्बो धालते जांग–ए–मूलू चिज़ारे ता चुमज़ी तारछ़ी।।
पर उमर पूरे साथ रंड्राड साती चुमज़ी मारछ़ी।

ढब्बा शुई सेईत मींबी पाटी पाटीउ संगी सातीरे खोकसी तारछ़ी
पर मीजे दोतु विश्वास चुमज़ी मारछ़ी।

तोग–ता–टंगा–ढब्बा शुबीए मी–ला चुमज़ी तारछ़ी।।
पर दोउ चरित्र–ए–ईमान चुमज़ी मारछ़ी।

शेष पृष्ठ :

खरगोश, ब्रागः की कथा

एक जा बणं बर्कास्यु बिचग तराई छल्लू चरने चरने यन्जी करी गीयेन। जेरा केरा इसीं ओसी किरजी करला तेन तराई छल्लू ऐनफा पेट भरने थियुरे। तेस दियाड़े एक ब्राग अपरि गिया। छलल़ू अबेशा डरी गीयेन ऐनफेओं बिच मुहें मुहें हेरीला छुटी गियेन।

ब्राग हउ शुआ, तेनी बोलिया तूसे इटी कोटिंग आएती? इ ठारतः हयां भो, तूसे हयां बगत। बोलो तूसे बिचंग मोड़ा कऊं भो?

छल्लू चुप्पि बेठेन, डरा झक्स डकने थिउरे, ब्रागे मोड़ी बकरी की छल्लूरे पछाता भी सत तेसर हेरने–हेरने तेसी बटते मांसां खाया। निछोटे डेकार लेयिला बोलिया हेरो अज त मेरा पेट भरई गिया, अइना एक मांह पिचंग इस्से दियाड़े हऊं फिरी अयु तां चेक तुसे थुले थुले बुई बेशो बोली करी तेटिंग उठी गिया।

रडे. बकरी की छल्लू अबेशा चिनोरे थिउरे किस बोलियात ब्राग अइकरी तेनोरे खई बिजी ब असे चोप्पन एक मांह पिचंग ब्राग छल्लूरे लोइला फिरी तेटी अपरी गिया। ब्राग कईबे साथे छल्लू की होश गुम बुई गीयेन। ब्राग हउशुइला फिरी बोलिया तुसे दुई बिचंग कोसंग मोड़े बो? अज मुरे मस्त बुकर लगोरी असे। मोड़ी छल्लूरे पछइ खई बिदा। अइना एक माह की दियाड़ा दी तेटिंग उठी गिया। रड.ा एक्के छल्लू साथी मेते। इसी ओसो यन्जी करना चिनोरा थिउरा। तेस मोके तेसर एक खरगोश हतुआ। छल्लू की हाल चाल पुछिया छल्लूए अपां बत्ते बित्था शुणंइला बोलिया। अइना एक माह पिचंग मेरी मौत असे। ब्राग अइबे असे। खरगोशे बत्ते (कहानी) कथा शुइयां ठटट बुइ करी बोलिया हेर अपसी दुइ इटी एक ठारे हतुइरे। ज्ञात घरनी गाटे एक साथे बिशले। मेरा गप्पा तपींरे मनीबे पड़ल छल्लू राजी बुई गिया। तेस पिचग साथे बैठेन। एक जा तेन दुइ रे कोठेयंग फूजा टुकरा हूतुआ। खरगोशे बोलिया इस उछू लेइ हणं। छल्लूए बोलिया तपीं अवेशा लालची असे, इ हइपां कोसंग कमा? लेई हण कम अइलः। एक जा तेनोरे तुटोरा कलम हतुआ। फिरी खरगोशे बोलिया इस कलमरे भी उछूं। छल्लूए बोलिया अपसी अनपढ रे कोसंग कमा? खरगोशे त्रटइला बोलिया पायों म लेइ हंण ।

एक माह पिचंग ब्राग छल्लूरे लोइला तेटी अपरी गिया। छल्लूए हउश नशइ बिदा खरगोशे बोलिया डरे मां बददे ठीक बुई गाल। ब्राग छल्लू कछा अइबे लगोरा थिउरा तां खरगोशे बोलिया ब्रागा तपीं तां एक पलक चोख छल्लू सरकारे विदोरा डाक अंण तंग तेखें छल्लूए डाक कलम आंगा। खरगोशे कलम कना पुटी शचाया बूज हतः करी ब्रागटरे बोलिया ई डाक सरकारे खास मवां हथे विदा इटी लिखोरा असे ऐंशु सरकारा ओनी नौ ब्रागः की खल लोइना। हऊं केत्तेया दियाडे दी नौ ब्राग लोना थिया। रूठ बोआ अज तपी इटी आया इ गप्पा शुइबे साथे ब्रागे छोआ भी दिता। चल्ता नशीबे लगा खरगोश किरजी करी बोलिया चोख तंग ऐबें मेरा बूटा तस्मां युबसी क्यूरा असे तूरे हऊं ऐब्बैं परउं। ब्रागे तेटिंग भी जोरे द्रो दी नशी गिया। तेस पिचंग ब्राग तेस ठारी बिल्कुल किरजी न किया। होरा–होरा कर ला खरगोशे छल्लू की जान बचाई।•

– करमा

नोट – उक्त कथा कुंज़ोम के 2008 के अंक में पृष्ठ 63 पर हिन्दी में छपे खरगोश और भेड़िया की कहानी का रूपान्तर है।

–सम्पादक

आलेख

ज़िला चम्बा में बौद्ध धर्म

हिमाचल प्रदेश का जिला चम्बा एक ऐसा ज़िला है जहां पर कई प्रकार की प्राचीन संस्कृतियों का मिलन होता है। चम्बा में सातवीं शताब्दी के मंदिर पूर्ण सुरक्षित हैं। कारण ऊंची ऊंची पहाड़ियों से घिरा होना। यहां मुस्लिम आततायियों के हमले व लूटपाट नहीं हुई।

चम्बा नगर अपनी स्थापना के एक हज़ार साल पूरे कर चुका है। दुनियां में ऐसे बहुत कम नगर हैं जिन्हें ऐसा गौरव प्राप्त है। इटली के बाद दुनियां में चम्बा नगर ही एक ऐसा नगर है जिसे यह गौरव प्राप्त है जहां एक ही अविभाजित परिवार या वंश ने राज किया। आज भी उनके लोग हैं। 2006 में सारा साल चम्बा में सहस्त्राब्दि समारोहों की धूम रही। साल भर किसी न किसी रूप में कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। हिमाचल प्रदेश भाषा एवं संस्कृति विभाग ने इसे आयोजित किया था।

चम्बा नगर व आसपास के क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के कई चिन्ह मिलते हैं जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि चम्बा ज़िला में बौद्ध धर्म का प्रभाव तो नहीं कहा जा सकेगा, लेकिन कुछ असर रहा है। चम्बा में भगवान श्री लक्ष्मीनाथ का मंदिर समूह है जो सातवीं शताब्दी का है, यहां ठीक भगवान की संगमरमर की प्रतिमा के नीचे भगवान बुद्ध की पीतल की मूर्ति ध्यान मुद्रा में है। कब से है कहा नहीं जा सकता इसे कोई नहीं जानता है। उस मूर्ति को प्रतिदिन स्नान कराया जाता है। उसकी पूजा होती है लेकिन इतिहास इसके बारे में खामोश है। पुजारियों को इसका कोई ज्ञान नहीं है।

कहा जाता है कि बहुत पहले कभी एक लामा तिब्बत देश से यात्रा करते करते चम्बा में भगवान के दर्शन करने आये थे। उन्होंने पुजारी के चरण अमृत मांगा तो पुजारी ने अपने पात्र में रखा जल उन्हें देना चाहा तो उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया। कहा कि मूर्ति के शरीर में जो प्रतिदिन पसीना पड़ कर गिरता है हम उसे ही चरण अमृत के रूप में लेंगे। पुजारी उनकी बातों को सुन कर हैरान हो जाता है। उसने कहा कि ऐसा तो होता नहीं है। लेकिन लामा तो जिद्द पर आ गए। उन्होंने कहा कि हम पूजा करेंगे आप इस पात्र को नीचे रखें। जब मूर्ति के शरीर से पसीना निकले उसे एकत्रित करें हम उसे ही ग्रहण करेंगे। लामा एक टांग पर खड़ा होकर पूजा करने लगता है उसने अपने साथ लाए डमरू का व वज्र का प्रयोग किया। अब पुजारी का सारा ध्यान मूर्ति की ओर ही था। आवाजों से उसके दिल में डर भी समा रहा था। कुछ समय के बाद पुजारी ने देखा की भगवान श्री की मूर्ति में पसीना आने लगा है। वह बहने लगा है। पुजारी ने उसे पात्र में एकत्रित कर लिया। पात्र भर गया। लामा ने पूजा समाप्त कर उसे ग्रहण किया और चला गया।

चम्बा नगर में इस प्रकार के और भी वृतांत मिलते हैं जैसे असाध्य बीमारियों से पीड़ित कुछ लोगों का तिब्बत से आये लोगों ने इलाज कर उन्हें रोग मुक्त किया था।

चम्बा की पहाड़ी चित्रकला में भी ध्यान मुद्रा व भूमि स्पर्श मुद्रा में बैठे बुद्ध के चित्र बने हैं। यह चित्रकला तो पुराने राजाओं के समय ही पहाड़ों में प्रचिलत हुई थी।

चम्बा के कुछ स्थनों पर तिब्बती लिपि में लिखे शिलालेख मिले हैं आज भी भरमौर के खड़ामुख के पास कुछ शिलालेख हैं।

लेकिन ज़िला चम्बा की चुराह घाटी व पांगी घाटी में तो प्राचीन गोम्पे हैं जो इस बात को दर्शाते हैं कि चम्बा में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा है जो आज दिन तक है। इनका जिक इतिहास

के पन्नों पर कहीं नहीं मिलता है जो हैरानी पैदा करता है कि ऐसा क्यों कर हुआ होगा? इस बारे में बेहतर इतिहासकार ही जानते हैं। जहां चम्बा की चुराहघाटी व पांगी घाटी में बौद्ध धर्म की बात है जब कश्मीर में बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार हुआ तो उसी समय माना जाता है कि पांगी घाटी में भी हिन्दुओं ने इस धर्म को अपना लिया। जो ऊंची ऊंची पहाड़ियों पर रहा करते थे वहीं पर सुरालघाटी से जंस्कर भी लोगों का आना जाना गर्मी के दिनों में रहता था। इसलिए इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि पांगी घाटी में तभी से बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार हुआ था।

चम्बा में आज चार प्रकार के बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग हैं। एक तो पांगी घाटी में रहने वाले हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में भोट कहा जता है। यह वह लोग हैं जो हिन्दू थे। इन्होंने बुद्ध धर्म को अपनाया था।

दूसरे लोग वह हैं जो तिब्बत मूल के हैं भारत में आज सैंकड़ों साल पहले भगवान बुद्ध के जन्म स्थान के दर्शन करने आये भारत को देवभूमि मानते हैं। उसके बाद अपने देश नहीं लौटे। यहीं के होकर रह गए। इन्हें ज्ञगर खाम्पा भी कहा जाता है। भारत को तिब्बती भाषा में ज्ञगर कहा जाता है। तिब्बत देश में खम राज्य के रहने वालों को खाम्पा के नाम से जाना जाता है। इसलिए इन्हें ज्ञगर खाम्पा भी कहा जाता है। यह तिब्बत मूल के इन्होंने आज दिन तक अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा है। पूजा पद्धति नहीं बदली है। इन लोगों को भारत की नागरिकता मिल चुकी है इन्हें कुछ लोग चम्बा खाम्पा कह कर भी पहचानते हैं।

तीसरे बौद्ध धर्म के लोग डलहौजी में रहते हैं यह शरणार्थी तिब्बती लोग हैं जो महामहीम दलाईलामा जी के साथ 1960 के दशक में भारत आये थे। अब यह लोग डलहौजी में ही रहते हैं। वहां पर व्यापार कर अपना निर्वाह करते हैं।

चौथे वह लोग हैं जो 1960 के दशक में किन्नौर से आकर जिला चम्बा की चुराह घाटी के जसौरगढ़ क्षेत्र में बसे थे। उन्होंनें वहां पर अपना गोम्पा बना लिया है अब चुराह में ही शादी ब्याह कर लेते हैं।

इस प्रकार चम्बा जिला में चार प्रकार के बौद्ध धर्म के लोग रहते हैं फिर भी इनकी चर्चा नहीं मिलती है।

चुराह घाटी में जसौरगढ़ का गोम्पा अधिक पुराना नहीं है। 1960 के दशक में बना था जहां पर तिब्बत मूल का लामा सेतन आज भी है बूढ़ा हो चुका है। तिब्बत से जवानी में भाग कर आया था। घूमते घूमते जसौरगढ़ पहुंचा तो वहां पर जो लामा थे उन्होने उसे कुछ दिनों तक रूकने के लिए कहा और स्वयं कहीं चले गए जो आज दिन तक नहीं लौटे। सेतन आज भी उनकी प्रतीक्षा करता है यह लामा तिब्बत के समदोह क्षेत्र का रहने वाला है। इनकी सारी पढ़ाई तिब्बत के ही मुख्य गोम्पा में हुई है। जसौरगढ़ में रहने वाले किन्नौर के वासी हैं। इनके बारे में कहा जाता है कि जब ठाकुर सेन नेगी चम्बा में जिलाधीश थे तो उन्हें यह क्षेत्र किन्नौर की तरह ही लगा। वह किन्नौर से कुछ परिवारों को लेकर आये उन्होंने उन्हें जसौरगढ़ में बसा दिया। तो आज दिन तक यहीं रहते आ रहे हैं। किन्नौर में उनके वंशज रहते हैं नाते रिश्तेदारियां भी हैं।

चुराह घाटी का दूसरा बड़ा गोम्पा भनोडी का है जिसका अपना इतिहास है। भनोडी गांव समुद्रतल से 9000 फुट की ऊंचाई पर बसा है। गांव कहना तो अब उचित नहीं है क्योंकि गांव के तो अवशेष ही बचे हैं। गांव भनोडी में तिब्बत मूल के लोग किस प्रकार आ बसे इसके बारे में कहा जाता है कि तिब्बत के लोग भारत को देवभूमि के रूप में मानते हैं। हजारों सालों से कठिन यात्रा कर भारत में आते रहे हैं। तिब्बत से भारत आने के सारे रास्ते बेहद कठिन व खतरनाक हैं। कई पर्वत श्रृंखलाओं को महीने लगाकर पार करना पड़ता है। रास्ते में कई घराने लूटने बैठे होते हैं जो लूट मार करते हैं। उसके बावजूद अपने इष्ट की जन्म भूमि के दर्शन करने आते रहे हैं। उन्हीं में से कुछ परिवार जब भारत आये तो वह पैदल भ्रमण करते करते चम्बा के इस क्षेत्र में आ गए। जहां उन्हें अपने देश जैसा ही वातावरण मिला। वह यहीं पर रहने लगे। उनके साथ

आए गुरू ने इस स्थान को अति पवित्र स्थान माना और रहने का निर्णय लिया। प्राकृतिक गुफाओं में लोग रहने लगे। कुछ तम्बुओं में रहते थे। लामा गुरू होने के कारण पूजा प्रतिदिन का नित्य कर्म था। जो भिक्षु साथ थे वह आसपास के गांवों में जाकर पूजा का सामान ले आते। वहीं पर गांव के लोगों से भिक्षा भी लाते थे। उस समय चुराह घाटी का यह क्षेत्र काफी समृद्ध था। क्षेत्र के लोगो के पास पर्याप्त अनाज होता था। लामा गुरू ने अपने चमत्कारों से भी लोगों को प्रभावित किया। सर्दियों के दिनों में तिब्बती लोग नीचे के स्थानों पर आ जाते थे। गर्मी के दिनों में ऊपर पहाड़ों पर जाकर रहने लगते। उन्होंने कुछ समय के बाद भेड़ बकरियां व खच्चरें पालना आरंभ कर दी। कुछ खेत भी बना लिए। बौद्ध धर्म की शिक्षा तो भिक्षु भिक्षुणियां गुरू से लेती ही थी। जब क्षेत्र में बौद्ध धर्म की चर्चा चली तो सुराल भटोरी के लामाओं ने भी इस अवतारी गुरू से संपर्क साधा और बौद्ध भिक्षु मनोडी से पूजा के लिए सुराल भटोरी तक आने जाने लगे। उसके बाद जम्मू कश्मीर के जिला डोडा तक इस बात की चर्चा पहुंची तो वहां के गोम्पा के लोगों ने भी आकर गुरू की शरण ली। पाडर में भी बौद्ध भिक्षु भनोडी गोम्पा से ही जाने लगे। इस प्रकार भनोडी बौद्ध धर्म की शिक्षा का बड़ा विहार बन गया।

राजा राम सिंह जो चम्बा के शासक थे, जब वे 1924–25 में पांगी जाने लगे तो पांगी जाने का एक मात्र रास्ता भनोडी से ही जाता था। उन्हें लोगों ने बताया कि इस क्षेत्र में तिब्बती लोग रहते हैं। उन्हें बताया गया कि वह किस प्रकार पहाड़ की प्राकृतिक गुफाओं में व तम्बुओं में ही रहते हैं। राजा को यह सुनकर हैरानी हुई। राजा स्वयं गुरू से मिलने के लिए गए। उन्होंने गुरू के दर्शन किए। राजा का स्वागत किया गया। उसके बाद राजा ने उन्हें वहीं बसने के लिए कहा। पहले गुरू ने इसे नहीं माना। बाद में वहीं बसने का मन बना लिया। इस प्रकार तिब्बती लोग वहीं पर रहने लगे। उन्होंने गुफा में जो मूर्तियां आदि बनाई थी उन्हें पहाड़ी शैली में गोम्पा बनाकर उसमें रख दिया। इन मूर्तियों का निर्माण तिब्बत मूल से आए कारीगरों ने ही किया। लकड़ी का सारा काम लद्दाख से आये कारीगरों ने किया। इस प्रकार गोम्पे का निर्माण हो गया।

कहा जाता है कि गांव भनोडी में पहले कभी बहुत बड़ा बौद्ध विहार हुआ करता था। हमें इसके अंश कश्मीर में जब बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार हुआ कनिष्क काल में उस समय के साथ जोड़ें तो सच्चाई का पता चलता है और इस बात को माना जा सकता है क्योंकि यह क्षेत्र जम्मू संभाग के जिला डोडा के साथ जुड़ता है। इस स्थान पर उस समय महायानी भिक्षु परंपरा के लामा रहा करते थे। वहीं अगर हम चीनी यात्री हवेन सांग की कुल्लू के बारे लिखी बातों को पढ़ें तब भी हम इस बात को मान कर चल सकते हैं कि जिन बौद्ध विहारों की वह बात करता है कहता है कि कुल्लू के आस पास 200 किलोमीटर में बौद्ध विहार थे उन्हीं में से एक भनोडी आ जाता है। तीसरा भनोडी के रास्ते सुराल भटोरी होकर जस्सकर की पहाड़ियों को जाने का रास्ता है।

भारत में जब बौद्ध धर्म समाप्त हुआ तो उसके बाद इस बौद्ध विहार का अस्तित्व भी विलुप्त हो गया।

बाद में एक और सभ्यता इसी स्थान पर आकर रहने लगी, जिसकी चुराह के लोगों को पूरी याद तो नहीं लेकिन उसके बारे में कुछ कहानियां सुनी व सुनाई जाती हैं। हो सकता है वह नाग जाति के लोग हों क्योंकि मैहलवार नाग व मैहलवार गली, मैहलवार धार तो अब भी है को तो सब जानते भी हैं। वहीं पर भनोडी के सामने की पहाड़ियों पर ही मैहलवार नाग का स्थान भी है। जिसे जानूताल व तिथ के नाम से आज भी जाना जाता है। मैहलवार नाग का स्थान तो विद्वानों के अनुसार भद्रवाह में हैं तीन भाई कहे जाते हैं सरवरी नाग, वासुकी नाग व मैहलवार नाग। इस बात के भी प्रमाण काफी मात्रा में क्षेत्र में मिलते हैं कि मैहलवार नाग व गुर्जर बादशाह के बीच युद्ध हुआ था। अगर युद्ध हुआ था तो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भनोडी के आसपास के क्षेत्रों में ऐसे कई प्रमाण हैं जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि

सदियों पहले वहां पर बस्तियां थीं। कई स्थानों पर टूटे पनिहारों के टुकड़े व बॉन के पेड़ों के नीचे लगी दीवारें इन बातों को प्रमाणित करती हैं कि कभी यहां पर कोई सभ्यता रहती थी। अगर पुरातत्व विभाग के लोग आकर इस पर काम करें तो चंबा की इस घाटी में कई रहस्य सामने आ सकते हैं।

चुराह के लोगों में प्रचलित कहानियों के अनुसार इस जगह पर जो जाति के लोग रहते थे वह काफी समृद्ध थे। कहा जाता है कि एक बार क्षेत्र में बहुत अधिक बर्फ गिरी। लोग अपने अपने घरों में ही कैद होकर रह गए। कई महीनों बाद उन्हें लगा कि बाहर निकल कर देखें तो सही कि वहां का हाल क्या है? वह बाहर निकले तो देखा कुछ और लोग भी बाहर आए हैं। तब एक ने दूसरे से पूछा कि सक्रांति कब है? तो उतर मिला कि आज जेठ महीने की तीन तारीख हो चुकी है। वह सुनकर हैरान हो जाता है। उसने कहा कि खेतों में बीजों को कब बोयेंगे और कब पैदा होगा, कब काटेंगे। इतने में उनकी औरतों ने घरों मे रखे सारे बीजों को भून दिया। कारण वह भी इस जगह में रहना नहीं चाहती थीं। बर्फ के बाद भारी भूस्खलनों ने उन्हें परेशान किया। चुराही भाषा में इस बात को कुछ इस प्रकार कहा जाता है, टोनिये टीशा, दमदी कईसा – वह लोग आपस में सलाह कर उस स्थान को छोड़ कर हरिद्वार के पार कहीं जाकर बस गए। कहां? लोगों को याद नहीं है। कहते हैं कि जाने से पहले उन्होंने देसी घी से घराटों को चलाकर उसमें सारे सोने के गहने पीस दिए थे।

गांव भनोडी में तिब्बती मूल के लोग तीसरी सभ्यता के रूप मे आकर बसे, आज वह भी वहां से उजड़ कर निकल चुके हैं। एक मात्र लामा बावा सोनम ज्ञातसो ही वहां गोम्पे में रहते हैं, उनकी भक्ति व श्रद्धा के कारण आज गोम्पे को नया रूप देने का प्रयास किया जा रहा है। इस बात के और भी कई प्रमाण हैं कि भनोडी का गोम्पा पुराना है। सुराल भटोरी के दर्शन करने जब गांव भनोडी के लामा गए थे तो वहां के लोगों ने इस बात की शपथ ली थी कि वह भविष्य में शिकार नहीं करेंगे। आज भी शपथ पत्र भनोडी में है। हिमाचल प्रदेश के निर्माता एवं प्रथम मुख्य मंत्री स्व0 डा0 वाई0 एस0 परमार भनोडी गोम्पा में आये थे। उनका चित्र गोम्पा में आज भी है।

भनोडी में बौद्ध भिक्षुओं को गुरूओं द्वारा शिक्षा दी जाती थी। इस बात के कई प्रमाण हैं। आज दिन तक सुराल गोम्पा पाडर गोम्पा से साल का खर्चा भनोडी में दिया जाता है। जसौरगढ़ के लामा भी साल का खर्चा भनोडी भेजते हैं।

भनोडी गोम्पा में जो श्री गुरू पदमसंभव की विशाल प्रतिमा है उसका मुकाबला नहीं है। वह अपनी कला में बेजोड़ है। जिस मुद्रा में उन्हें दर्शाया गया है रंगों का प्रयोग किया गया है उसे हम मथुरा शैली से भी जोड़ सकते हैं। इतने सालों बाद भी आज तक बेजोड़ है। श्री गुरू पदम संभव की यह विशाल मूर्ति उसके साथ ही और छोटी छोटी मिट्टी की बनी कई मूर्तियां हैं जिनमें अलोकितेश्वर सहस्त्र बाहू व तारा की मूर्ति भी अपनी कला में बेजोड़ हैं।

भनोडी गोम्पा में प्राचीन थंके हैं। हस्तलिखित पोथियां हैं, लकड़ी पर भी चित्रकला की गई है। सहेजने व संवारने को व अध्ययन को बहुत कुछ है। गांव भनोडी के इस एक मात्र गोम्पे में जिसे सहेज कर रखने में बावा सोनम ज्ञातसो का बहुत बड़ा योगदान है।

चुराह घाटी की प्राचीन संस्कृति से इस कदर घुले मिले हैं तिब्बती मूल के लोग कि उन्हें पहचानना कठिन हो जाता है। वह फर्राटे से चुराही बोलते हैं। खान पान इनका अपना है। पहनावा बदला है। कुछेक बुजुर्ग बचे हैं। सारी भूमि पदमः छोखर लिंग बौद्ध गोम्पा के नाम ही थी। बाद में 1962 के दशक में गुरूयानी ने भूमि अपने लोगों को दी थी कि वह कमा कर गोम्पे को कुछ अंश दान दिया करें। अब लोगों ने उस भूमि को बेचना आरंभ कर दिया है। भनोडी के इतिहास के बारे में पुराने लोग जानते हैं। गांवों के लोग आज भी लामा के पास अपनी समस्याओं को लेकर आते हैं जिनका समाधान वह करते हैं। लामा दिन रात अपनी पूजा में लगे रहते हैं।

वर्ष 2007 में पहली बार भनोडी गोम्पा में तिब्बत फैस्टीवल का आयोजन किया गया था जिसमें नियंगामा ग्रुप के पांच लामा धर्मशाला से पूजा के लिए गांव भनोडी में आये थे।

पांगी घाटी में बहुत से बौद्ध लोग रहते हैं जिन्हें भोट कहा जाता है। जिन जगहों पर वह रहते हैं उन्हें भटोरियों के नाम से जाना जाता है। प्रसिद्ध भटोरियों के नाम है सुराल भटोरी, परमार भटोरी, कुमार भटोरी, चस्क भटोरी व कुछ और है। सुराल भटोरी में ताई सुराल में बड़ा गोम्पा है जहां पर भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा है। वहीं पर गुरू पदमसंभव की प्रतिमा भी है। कुछ थंके भी हैं। वहां के लामा गोपी राम का निधन हो चुका है। अब वहां पर कोई लामा नहीं है।

पांगी घाटी की चस्क भटोरी में तिब्बत मूल के ही लोग रहते हैं। समुद्रतल से 12000 फीट से अधिक ऊंचाई पर बसा है। चस्क भटोरी गांव आना जाना काफी मुश्किल है।

भनोडी के लामा बावा सोनम ज्ञातसो मानते हैं कि उन्हें गांव में रहते कई पीढ़ियां हो चुकी हैं। उनका जन्म इसी स्थान पर हुआ है। वह कई बड़े लामाओं को जो अवतारी हुए हैं भनोडी में रहते थे उनके नाम तक जानते हैं। उन्हें 1962 में गुरू की मृत्यु के बारे में सारा पता है। उसके बाद सिक्किम से लामा आये उनके बारे में भी जानकारी है।

बेरोजगारी से तंग होकर भनोडी से तिब्बती लोग बाहर चले गए। वह बाहर जाकर पैसा कमाने में लग गए। उन्होने इस गोम्पा की सुध लेना ही छोड़ दिया। अब गोम्पा में कोई नहीं आता है। जिस कारण गोम्पा की हालत दिन प्रतिदिन खस्ता होती गई। 2005 में अधिक बर्फ गिरने से मंदिर का एक भाग टूट कर गिर गया। समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित हुए कोई भी भनोडी वासी उसे बचाने को आगे नहीं आया।

भनोडी में गोम्पा 150 साल से अधिक पुराना है। इसके बारे में चुराह के लोग जानते हैं। गांव मनसा की महेशी देवी जो 100 सल से अधिक आयु की है का कहना है कि भनोडी में भोट लोग पहले से ही रहते हैं। जब वह छोटी थी तब गांवों में भिक्षु लोग भिक्षा लेने आते थे। उसे इस बात की याद है। उनका कहना है कि वह कभी भनोडी नहीं गई लेकिन भोटों के बारे में जानती है। इनके गुरू के पास लोग अकसर अपनी समस्याओं को लेकर जाते रहे हैं जो बिना पैसा लिए उनका निदान करते थे। इसी प्रकार और कई गांव के बुजुर्ग लोग इसबात के साक्ष्य देते हैं कि गांव भनोडी में तिब्बती लोग जिन्हें वह भोट कहते हैं रहते आ रहे हैं।

इतिहासकारों से क्यों भनोडी छूटा कहा नहीं जा सकता।

आज भनोडी गांव में गोम्पा की देखभाल के लिए जिला पदमा छोखरलिंग बौद्ध तिब्बतियन ऐसोसियेशन भनोडी का गठन किया गया है। वहीं पर भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से इस प्रकार विद्वानों से सीधे सम्भाषण का अवसर मिल रहा है जिससे हमें अपने खोये अतीत को प्राप्त कर सकेंगे।

चंबा का इतिहास 1000 साल से भी पुराना है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। इतिहासकारों ने केवल चंबा नगर व आसपास के क्षेत्रों को ही चुना, भरमौर की ओर तो विद्वानों ने ध्यान दिया। चुहारघाटी के इन क्षेत्रों में फैली संस्कृति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जबकि इतिहास के इन बिखरे पन्नों को जोड़ने से हमें बहुत कुछ मिल सकता है। जब चंबा बसा था उस समय चुराह में कौन कौन सी सभ्यताएं थीं वहां पर कौन लोग रहते थे? चुराहघाटी की उस समय की स्थिति क्या थी? जब लोग भगवती देवी कोठी के मंदिर पर अध्ययन कर सकते हैं उसकी काष्ठकला व भिती चित्रों पर लिख सकते हैं तो गांव भनोडी को अछूता क्यों छोड़ा जा रहा है।•

– स्वर्ण दीपक रैणा

पूणा का त्यौहार

चन्द्रा घाटी यानि तिनन घाटी में हर वर्ष फरवरी मास में देव त्यौहार पूणा मनाया जाता है। इसका सम्बन्ध मैदानी क्षेत्र, मं मनाए जाने वाले शिवरात्री और बसन्त पंचमी के त्यौहारों से है।

इस त्यौहार को तिनन में (गौन्धला से मूलिंग) तक के लोग लमोई के नाम से जानते हैं। रोपसंग गांव से कोकसर तक के लोग इसे पूणा के नाम से मनाते हैं। इस त्यौहार का शुभारम्भ गांव रोपसंग के ग्राम देवी भोटी अर्थात फाला मेलाकर के यहां से आरम्भ होते हुए पूरे तिनन घाटी के नौ देवी देवताओं के निवास स्थान में बारी बारी से मनाया जाता है।

राजा घेपङ सद ने परिवार सहित होर देश यानि मंगोल देश से ज्ञयागर भारत देश के लाहौल घाटी में आगमन किया। बारालाचा के समीप राक्षसों ने उनको रोका। तब दैत्यों के साथ युद्ध कर के उनको पराजित किया। लाहौल घाटी मैं आकर के चन्द्रा घाटी में नियमित रूप से बसने का मन बनाया और एक एक करके सभी देवी देवता अलग अलग गांवों में बसते चले गए। मिलाङ तेते गौन्धला गांव में, शलबर टीलिंग में, ज्ञयुंग्डुल सकर यानि मरगेद में, ज्ञुंगलावर जगला में, डबला रालिंग में, फाला मोकब शूलिंग में, फाला मेलाकर भोटी रोपसंग में, तिंगलागुर शाशिन गांव में, तथा राजा घेपड. स्वयं यंगलिंग में बस गए।

देवता गणों के लाहौल आगमन के समय राजा घेपड. की मां भी उनके साथ थी। बारालाचा जोत के समीप राक्षसों ने देवताओं को लाहौल में प्रवेश न करने देने के लिए बर्फानी तूफान और ग्लेशियरों से इन के रास्तों को रोकने की कोशिश की। कई दिनों तक बर्फ बारी होती रही। इसके उपरान्त राजा घेपड. सद सपरिवार लाहौल घाटी में प्रवेश करने में सफल हुए। परंतु उनकी मां कहीं ग्लेशियर में दबकर रह गई। सभी देवता जिंग जिंगबर तक दौड़े दौड़े चले आये। यहां छः दिनों तक रूकने के बाद पुनः घेपङ अपनी अमां को ढूंढने के लिए वारालाचा गए। ग्लेशियर में से घेपङ ने अमा को ढूंढ निकाला और सही सलामत जिंगजिंगबर पहुंचाने में सफल हो गए। उस वक्त देवी फाला मेलाकर और ग्युंगडुल ने पहले तो घेपङ अमां को पीठ में उठाने का निश्चय किया। लेकिन थोड़ी देर के बाद ख्याल आया कि मां को पीठ कैसे दिखाएं। फिर इन देवियों ने फैसला किया कि मां को पीठ न दिखाते हुए ही उठाया जाए। ऐसा करें कि दोनों का मुंह मां की तरफ हो और कदम पीछे की ओर बढ़ाते हुए आगे चला जाए। इस तरह दोनों का चेहरा आमा की ओर ही रहगा। ऐसा करते हुए दोनों मां को उठा करके आगे बढ़ रहे थे तो दोनों एक दूसरे को देख कर हंस पड़े। उन्हें हंसता देख कर मां ने दोनों को यह वरदान दिया कि दुनिया में दुखों और संकटों का भरमार ही क्यों न हो लेकिन ऐसे दुःख के समय भी लोगों के चेहरों से हंसी लुप्त न हो। तभी तो आज हम किसी शव यात्रा में भी शमिल होते हैं तो वहां भी कई बार किसी बात में हसीं आ ही जाती है। हमारी हंसी रूकती नही है। साथ में मां ने इन दोनों देवियों को वरदान दिया कि फाला मेलाकर देवी भोटी रोपसंग गांव की ग्राम देव हर वर्ष नौ देवी–देवताओं का "मंग अलछी" करेंगे । अर्थात सपनों की दुनिया से सांसारिक दुनियां में लाएंगे। ग्युंगडुल मरगेद सद को यह बरदान दिया कि बाकी देवी देवताओं का हर तीन वर्ष बाद रथ सजाया जाएगा। परंतु मरगेद सद का रथ हर दो वर्ष के उपरान्त सजाया जाएगा और ग्राम भ्रमण के लिए ले जाया जाता रहेगा। इन्हीं वरदानों के कारण ही देवी फाला मेलाकर का मंगअलछी के साथ पुणा त्यौहार का शुभारम्भ हुआ। गांव रोपसंग से होता हुआ। पूरे तिनन घाटी में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

रोपसंग पूणा का शुभारम्भ करने के लिए हमारे ग्राम देवी फाला मेलाकर को वरदान मिला था जो आज तक बदस्तूर प्रचलित है। इस त्यौहार में पुराने समय में राजा घेपङ के पुरोहित को

खलगमूर्ति नामक स्थान जाना पड़ता था। यह आधुनिक सतिंगरी गांव के समीप है। इन्हें इस त्यौहार में भाग लेने के लिए निमंत्रण देकर साथ में लाने हेतु रोपसंग गांव के ग्राम देवी फाला मेलाकर के पुजारियों को ख्वालगमूर्ति के लिए प्रस्थान किया जाता था। प्रस्थान से पूर्व देवी देवताओं से यह दुआ की जाती थी कि इनकी राह में जो कोई भी मानव दानव या जानवर आये तो उसे भस्म कर दें। दुआ मांगने के पश्चात गांव वासी इन्हें दोपहर बाद ख्वालगमूर्ति के लिए रवाना करते थे। इस दिन इन पुजारों को नंगी टांग, नंगे पांव सिर्फ घास के जूतों (पुला), बिना जुराबों के, चाहे जितनी भी बर्फ पड़ी हो या पड़ रही हो, हर हाल में उन्हें जाना ही पड़ता था। बदन में सिर्फ स्थानीय दुप्पो (चोगा), सिर पर एक टोपी, सफेद पगड़ी (बैण्ड) और फूलों का झोलणू लगा होता था। उस रात दोनों जनों को रालिंग गांव के उपर एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे (शुर) जूनिफर के टहनियों के बिछौना, सिरहाना और ओढ़नी बनाकर रात गुजारना पड़ता था।

अगले सुबह उनकी यात्रा आरम्भ हो कर सांय काल में ख्वालगमूर्ति पहुंच कर ही समाप्त होती थी। वहां देव पुरोहित के घर पहुंचने पर दरवाजे के बाहर खड़े होकर जोर जोर से (फा) देव पुरोहित को संबोधित करते हुए निमंत्रण दिया जाता था कि वह रोपसंग पूणा में पधार कर देव अनुष्ठानों का विधिवत रूप से निर्वाहन करें। पुजारों को ऐसा तीन बार बोलना पड़ता था। तब तक पुजारों के लिए फा का दरवाजा बंद रहता था। तीन बार संबोधन करने पर ही दरवाजा फा का पुजारों को भीतर प्रवेश के लिए खुलता था। देव पुरोहित अर्थात फा रोपसंग पुजारों के आने से एक सप्ताह पूर्व से ही तपस्या में बैठता था और वह उसी दिन शाम को उठता था। उस दिन रोपसंग गांव के देव पुजारी वहां पहुंचते थे। दूसरे दिन फा पुजारियों का प्रस्थान रोपसंग के लिए होता था। सांय काल में इन्हें रोपसंग में पूणा के दोंगखोर में अर्थात पूणा में गाये जाने वाले देव गाथा में सम्मलित होना पड़ता था।

इसका सम्बन्ध मैदानों में मनाये जाने वाले शिवरात्री और बसंत पंचमी के त्यौहारों से भी है। लेकिन मनाने का दिन और तरीका भले अलग अलग है। पूणा में दोंगखोर (देव गाथा या नाच) के लिए जिसके घर में पूणा का बारी होता है उस घर के छत पर किलटे में बर्फ भर कर उसे छत पर उल्टा दिया जाता है और उसे शिवलिंग का रूप देकर उसे पूजा का रूप दिया जाता है और गांव के देवी के पुजारी परिवार के पुरूष सदस्य पंक्ति में सबसे आगे रहते हैं चाहे वे उमर में छोटे ही क्यों न हों। उस के बाद अन्य गांव के पुरूष सदस्य देवगाथा के साथ इस दोंगखोर नाच में एक दूसरे के हाथों को पकड़ कर बर्फ के शिवलिंग रूपी मूर्ति के चारों ओर गोल दायरे मे नाचते हैं जिसमें *खोरयोंग दोखरी कंग दु* ———— देवगाथा गाया जाता है। इस नाच में या तो सात या नौ पुरूष भाग ले सकते हैं। इस नाच और देवगाथाओं को सुनने और देखने के लिए आस पड़ोस के लोग अपनी पारंपरिक पहरावों को पहनकर उमड़ पड़ते थे। इसके उपरांत तीन दिनों तक पूणा त्यौहार का कार्यक्रम चलता रहता है। खूब छंग आराक स्थानीय पेय का दौर चलता है। लोग खाने पीने का खूब आनन्द लेते हैं। जौ के दानों को किसी बर्तन में बीजा जाता है। जब तक जौ के दाने उग नहीं जाते तब तक तो बर्तन का मुंह खुला ही रखा जाता है। परंतु उगने के बाद बर्तन का मुंह ढक कर रखा जाता है ताकि धूप से ये हरे न हो जाएं। लगभग 5–6 इंच लम्बे होने पर इन्हें पीले फूलों के रूप में एक दूसरे को पूणा की बधाई देने में प्रयोग में लाया जाता है। इसे स्थानीय बोली में ख्युद चाची और बाला रन्ची कहा जाता है। ख्युद काटू के आटे का पेस्ट बना करके एक दूसरे के मुंह में लगाया जाता है। खास करके युवक युवतियां आपस में खूब इस का आनन्द लेते हैं। परंतु वरिष्ठ लोगों को सिर्फ टीका ही लगाया जाता है। यौरा रूपी फूल देकर उन्हें बधाई दी जाती है। उसके बाद किंच बुलची होता है जिसमें सभी गांव वाले अपने अपने घर से तीन किंच अर्थात काटू के आटे का बना हुआ टंगरोर लाते हैं और एक निश्चित समय पर सभी गांव वालों को इन टंगरोर (किंच) को पूणा

मनाया जाने वाले घर के छत पर लाना पड़ता है। फिर छत के सामने कोई ढलानदार जगह देखकर बारी बारी से दक्षिण से उत्तर की ओर स्थापित करते हैं। फिर तीन धनुष से इन टंगरोरों को भेदने का दौर शुरू होता है। ऐसा माना जाता है कि नव विवाहित युवक यदि सबसे आरम्भ में ही किसी टंगरोर को भेदने में कामयाब हो जाए तो वह अगले वर्ष इस त्यौहार में आने तक एक सुंदर सुशील पुत्र का बाप बनेगा। उसके उपरांत सभी गांव के टंगरोर रूपी किंच को इकटठा करके देवी देवताओं को भेंट स्वरूप चढ़ाया जाता है। फिर सभी ग्रामवासियों को इनके छोटे छोटे टुकड़े करके देते है। शेष यौरा रूपी फूल और तेल में तले हुए एक एक आटे का बना हुआ किन्च् नये जन्मे पुत्रों के माताओं को गांव के सभी गृहणियां को मुबारिक बाद के साथ दिया जाता है। किंच़ देने का अर्थ होता है पुत्र का पार्टी यानि कलछोर। डियू और किंच लेने वाले नई माताएं भी समझ जाती है कि हमें लड़के का कलछोर देना ही है।

इसके बाद चौथे दिन फैच़ी होता है इस दिन ग्राम देवी को एक भेड़ बलि चढ़ाया जाता है। उस भेड़ के मांस को पका कर शेष के रूप में सभी लोगों में वितरित किया जाता है। पुराने दिनों में फा यानि देव पुरोहित पूरे वर्ष का भविष्य वाणी करते थे कि आने वाला वर्ष कैसा रहेगा। फसल कैसा होगा। मौसम यहां के लोगों के अनुकूल होगा या नहीं। प्राकृतिक आपदाओं एवं रोग इत्यादि से लोगों को चेताते थे। ऐसा माना जाता था कि फा द्वारा की गई सभी भविष्यवाणी शतप्रतिशत सही व सच सच साबित होती थी। इसके बदले में फा को पैसे तो उन दिनों प्रचलन में ही नहीं था लेकिन उसे हर गांव में जहां वह आता था खूब अनाज, ऊन, वस्त्र इत्यादि भेंट स्वरूप दिया जाता था। शायद फा को पुणा के दौरान इसी लिए बुलाया जाता था ताकि वह आ करके पूरे वर्ष का भविष्यवाणी करे। लोग फा द्वारा किए गए भविष्यवाणी के अनुरूप अपने गृहस्थ के कार्यों को सुचारू रूप से संचालन कर सकते थे।

लेकिन कालान्तर में मौसम के विकट परिस्थितियों और दूरी को मध्यनजर रखते हुए यहां के लोगों ने राजा घेपङ तथा फाला मेलाकर से देव गुर के माध्यम से पूछा कि यदि हम आपके फा अर्थात देवपुरोहित को ख्वालगमूर्ति से लाकर थोरंग (गोन्धला) के नीचे तिच़ंग नामक स्थान में बसाने की अनुमति प्रदान करते हैं तो रोपसंग देवी के पुजारों को फा बुलाने के लिए इतने दूर जाना नहीं पड़ेगा। ऐसा कहा जाता है कि खुद परिवार ने खुशी खुशी अपनी सहमति दे दी। तत्पश्चात फा को गोन्धला के नीचे तिचंग में बसाया गया। यह शायद उन दिनों की बात है जब पूरे लाहौल घाटी मे राजा घेपङ का ही बर्चस्व था। उस वक्त न कोई मानव राजा था न कोई ठाकुर। जो भी कार्य होता था राजा घेपङ से सहमति लेकर ही होता होगा। यह बात उपरलिखित फा को तिच़ंग में बसाने की बात से स्पष्ट होता है।

तत्पश्चात फा को बुलाने जाने की परंपरा को गैरजां (पुंक्पी) कहा जाता था गैरजां अर्थात आधुनिक दालंग को पुराने जमाने में गैरजां कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि देवी मेलाकर के पुजारियों को फा बुलाने जाने से पूर्व जुंगलिंग गांव में लवदग बूठा अर्थात एक जूनिफर पेड़ है जिसे यहां के स्थानीय लोग लवदग बूठा के नाम से जानते हैं। उसके सामने जा कर घेपङ सद के पूरे परिवार से यह दुआ मांगते थे कि उनके रास्ते में जो भी आए या कोई उन के रास्ते में विघ्न डालने की हिम्मत करेगा तो वह भस्म हो जाएगा । जनश्रुति है कि तत्कालीन खंगसर घराने के ठाकुर ने इन पुजारियों और देवताओं की परीक्षा लेने की ठान ली और एक ब्रीमो अर्थात याक और गाय के मिलाने से पैदा हुए संतान की चौथी पीडी क्यों कि इस की छठी पीढी अपने वास्तविक नस्ल याक ही होता है इस ब्रीमों को पुजारों के गांव मरज़ेद में प्रवेश से पूर्व ही उनके रास्ते ला कर रख दिया था। उक्त ब्रीमो सूने वाली थी। शायद ठाकुर साहब को लगा होगा कि मात्र दुआ मांगने से कोई प्राणी भस्म हो जाएगा। सोचकर उन्हें परखने के लिए बेचारी ब्रीमों को रास्ते में ला खडा कर दिया। लेकिन अफसोस ठाकुर साहब को इनकी परीक्षा लेना काफी मंहगा साबित हुआ। पुजारी गांव मरज़ेद के सीमा से बाहर होते ही ब्रीमों भगवान को प्यारी

हो गई। तत्पश्चात लोगों के मन में भय की भावना बढ़ गई। फाला मेलाकर के लवदग पुजारी से दोंगथु हो जाए अर्थात मिलन हो जाए तो उसकी मौत निश्चित है। अतः इस से बचने के लिए पुनः सद परिवार से इज़ाज़त मांग कर फा को तिचंग से उठा करके जगला में स्थापित किया गया। वहां घेपङ का फा अर्थात देव पुरोहित आज भी विराजमान है। जगला गांव में इस लिए बसाया होगा क्योंकि पुराने दिनों में जगला से पीछे जितने भी गांव थे वे सब रास्ते से काफी उपर नीचे बसे हुए थे अतः जागला गांव फा के बसाने का सबसे सुरक्षित स्थान समझा गया।

वर्षों पहले फा के पास जितना भी जमीन था पूरा का पूरा राजा घेपड का ही होता था। लेकिन कालान्तर में जो बदलाव आया है उसके दुष्परिणामों से राजा घेपड. भी अछूते नहीं रह पाये। परिणाम स्वरूप आजादी के बाद भारत के राजाओं, ठाकुरों और देवी देवताओं के वर्चस्व को पूर्णतया समाप्त करके जनतांत्रिक सरकार की गठन की गई। सभी मुजारों को समाप्त करके मालिकाना हक दे दिया गया। इस प्रकार 1950–52 के भू बंदोबस्त के बाद सभी देवी देवताओं के जमीन जहां जहां भी थे सभी का मालिकाना हक समाप्त करके पुजारों और देव गुरों के नाम कर दिया गया। इस के बावजूद आज पुजारी फा गुर आपसी जिम्मेदारियों एवं कर्तव्यों को बखूबी समझते हुए आस्था को बरकरार रखते हुए उसी तरह से निभा रहे हैं जिस तरह वे पहले निभाया करते थे। उनके व्यवहार में किसी किस्म का बदलाव अभी तक नहीं देखा गया है। यही उनकी सच्ची आस्था और विश्वास का जीता जागता उदाहरण है।

यह पूणा त्यौहार संकुचित होता हुआ आज इस स्थिति में आ गया है कि लुप्त होने के कगार पर है। सिर्फ रोपसंग गांव के पूणा त्यौहार की ही बात नहीं अपितु पूरे तिनन घाटी में सभी की यही अवस्था है। पहले उक्त पूणा त्यौहार 10–12 दिनों तक चलता था। लेकिन अब सिमट कर मात्र तीन दिनों का रह गया है। इससे ऐसा लगता है कि हम लोग खास करके हमारी आने वाली पीढ़ी विकास के नाम पर अपनी संस्कृति धरोहरों रीति रिवाजों एवं देवी देवताओं को भूलते जा रहे हैं जो कि शुभ लक्षण नहीं है।•

– प्रेम लाल

पृष्ठ सें :–

टंगा ढब्बो धालते मोढे मोढे तीर्थरि–ता जलवी तारछी।।
पर सच्चे धर्म चुमज़ी मारछी।
ढब्बो धालते मोढे मोढे गोम्बारे–ए–मंदरारे–ता बणाच्ची तारछी
पर प्रभु पवित्र सोखर ला चुमज़ी मारछी।

टंगा ढब्बा शुबिए नाता रिश्ता रे ता चुमज़ी तारछी।।
पर दोतु सच्चे दा खोकच्ची मारछी।

टंगा ढब्बो धालते मोढे से मोढे दान ता रांझी तारछी
पर क्षमादान चुमज़ी मारछी।

तोग चिए शू छने शू भते धिर टंगा ढब्बो धालते खोकची तारछी।।
पर हेन्दू मुल्क ए समाजो शांति समृद्धि ए खुशहाली डब्बाज़े जेते चुमज़ी मारछी।

टंगा ढब्बाज़े भत्ते धिर चुमज़ी मारछी।
टंगा ढब्बज़े भत्ते धिर चुमज़ी मारछी।•

– श्रवण कुमार

खम्पा भाषा में लोकोक्तियां

1. ནད་མ་ཡོང་ལ་སྐུ་རིམ་བྱེད། དུས་མ་ཡོང་ལ་སྡིག་ཐབ་བྱས།།

2. འཛོན་ཤིང་ཨ་མའི་འཛོན་ཤིང་ལ། ལ་རྒྱུ(སྒྲ་རྒྱུས?)ཨ་ཕའི་ལ་རྒྱུ།།

3. མི་ཅན་མི་ལ་ཁ་ཏ་ལབ་པ་སང་། ཀོ་བ་སྐྱམ་པོ་མཉེས་ན་དཀའ།།

4. ཁ་རྡུལ་ལ་གཏམ་མཁས་པ། མི་རྡུལ་ལ་མི་ལས་མཁས་པ།།

5. མི་མང་ཁ་དུག་ཡིན། མི་མང་ལག་གསོར་ཡིན།།

6. མི་གསུམ་ཁ་འཛོམ་ན། ཐུམ་ཟེའི་རམ་ཁྱི་ལ་འཁྱམ།།

7. དཔྱར་གྱི་དུས་ལ། ས་ལ་བདག་པོ་ཆོབ།།
དགུན་གྱི་དུས་ལ། ལྷུགས་ལ་བདག་པོ་ཆོབ།།
གནམ་གཉིས་རྒྱུ་ནི། ཁ་ལ་བདག་པོ་ཆོབ།།

8. མི་ཧན་ལ་དབང་ཐོབ་ན། ཆུ་ཆེན་དེ་ལ་ལྡབ།།

9. རང་དོན་གྲུབ་ན། ཆ་ལུགས་ཅེན་ར་ཅེན།
ཞིམ་པོ་བྱུང་ན། འདོས་དེ་མི་ནམི།།

10. མི་ལམ་མི་ལ། དག་ཚལ་མེད།
ཨམ་ཆི་སྨོན་ན་སྨོན་ཐབ་མེད།།

11. དཔྱིད་ཀ་དཔྱིད་ཀྱི་རིང་།
རིང་མོ་ལ་གྲང་གསུམ་རྡོད་གསུམ།
མི་མི་ཚེ་རིང་མོ་ལ། སྐྱིད་གསུམ་སྡུག་གསུམ།།

यूं तो हर वर्ग के लोगों के अपने अपने वातावरण और समय के अनुसार कुछ न कुछ कहावतें प्रसिद्ध हैं। बहुसंख्यक समाज की कहावतें तो आम प्रचलित हैं। परंतु अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों की कहावतों तथा लोकोक्तियों की ओर साधारणतया लोगों का ध्यान कम ही जाता है या अनसुनी रह जाती है।

हिमाचल प्रदेश के कुछ जिलों जैसे कुल्लू, मंडी, चंबा और शिमला में खम्पा जाति के अल्प संख्यक वर्ग के लोग सदियों से निवास करते आ रहे हैं। इनकी अपनी भाषा, संस्कृति व रीति रिवाज हैं। ये बौद्ध अनुयायी हैं और धर्ममीरू हैं। ये लोग अपने सिद्धान्तों पर अढिग रहते हैं जो इन लोकोक्तियों से भी स्पष्ट होता है। पूर्व काल में ये लोग घूमन्तु जीवन बिताते थे और इनका जीवन यापन भेड़ बकरियों और घोड़े पालने से होता था। व्यापार इनका एक बड़ा पेशा था। वर्तमान काल में इन्होंने स्थायी निवास बना लिए हैं और नए पेशे भी अपना लिए हैं। लोग कृषि करने लगे हैं और बागवानी भी करते हैं। फिर भी काफी लोग व्यापार ही करते हैं। बेशक अधिकतर छोटे स्तर के हैं लेकिन पारंपरिक रूप से ये कुशल व्यापारी हैं। श्री छेरिंग दोर्जे जो हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध इतिहासकार हैं, के अनुसार 'खम्पा' प्रजाति के लोग हिमाचल प्रदेश में करीब साढ़े तीन और चार सौ वर्षों से रह रहे हैं।

यदि खम्पा प्रजातियों में प्रचलित लोकोक्तियों की ओर ध्यान दें तो वे आज के युग मैं भी अप्रसांगिक नहीं है और ये यथार्थ की ओर इंगित करते हैं। आज विश्व की छोटी भाषाएं लुप्त हो रही हैं। और ऐसी ही अवस्था खम्पा भाषा की है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए लेखक ने कठिन और लंबे समय के प्रयास में इन लोकोक्तियों का संकलन किया है और इन्हें लुप्त होने से बचाने का प्रयत्न किया है। पाठक अवश्य इसकी प्रशसा करेंगे।

इनके जीवन पद्धति का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं।

एक बार जब यहां अंग्रेजों का राज था खम्पाओं का एक समूह कहीं नदी के किनारे मैदान मैं तम्बू गाडे रूके हुए थे। साथ में इनके घोड़े बांधे हुए थे। यहां का असिस्टैंट कमीश्नर घूमता हुआ वहां से निकल रहा था। उसने पूछा तुम इस प्रकार क्यों इधर उधर घूमते रहते हो। हम तुम्हें जमीन देंगे। तुम बस कर एक जगह आराम से रहो। तो लोगों ने ज़मीन लेने से इंकार कर दिया। वे गर्मियों में उपर की ओर जाते थे और सर्दियों में नीचे की ओर आते थे। ऐसी ही घटना कांगड़ा में घटी बतायी जाती है।

लोकोक्तियां

1 नै मायोंग ला कुरिम झे,
धू मायोंग ला धोकधप झे।

2 जोनदंग आमे जोदंग ला
लारझा आवे लारझा।

3 मीयें मी ला, खाता लावा संग,
कोवा काम्पो ला ञें ना गा।

4 खारूल ला तम खेवा,
मिरूल ला मीले खेवा।

5 मीमांङ खा धुक यिन
मीमांङ लाग सेर यिन।

6 मी सुम खा जुम ना
ठामजे रामा खी ला ख्यम।

7 यर गी धू ला सा ला दागपो ज्ञोप
गुन गी धू ला चाक ला दागपो ज्ञोप
नमशीं ज्ञू नी खा ला दागपो ज्ञोप

8 मींगेन ला आंग थोप ना
छूढेन दे ला धव।

9 रांगधोन ड्डुप ना छालुक ञेन ना ञेन
शिम्बू छुंगना वो दी शी ना शी।

10 मीलम मी ला दू ड.ल मेत
अमजी तोन नां तोंदव मेत।

11 पीका पीञी रिंड.बो ला, ठंगसुम धड. ठोहसुम
मी मीचे रिड.बो ला किद सुम धड. दुगसुम।

हिन्दी अनुवाद

1 बीमार होने से पहले कुरिम की पूजा करना, और समय से पहले बाधा निवारण करना।

2 निपुणता तो माता की और ठाठ बाठ बाप का दिखाता है। सामान किसी से लिया है और दिखाता किसी और का है।

3 ऐसे आदमी को जो दूसरों की बात नहीं मानता है उसको उपदेश देने से भला है कि कोई सूखी खाल को मले। उससे कुछ तो लाभ होगा।

4 जो व्यक्ति बोलना नहीं जानता है वह बडी बडी बातें करता है और जो व्यक्ति काम करने मे निकम्मा है वह दूसरों का काम करने में होशियार होता है।

5 बहुत सारी लोगों की बातें ज़हर के समान है। लेकिन एक काम में बहुत सारे लोगों का हाथ लग जाए तो वह सोने की तरह है। सब आसानी से हो जाता है।

6 तीन आदमी यदि एकमत हो जाएं तो ब्रहमण की बकरी भी कुत्ते के साथ भाग सकती है अर्थात कोई भी षडयंत्र कर सकता है।

7 ग्रीष्म में मिटटी की सम्भाल करें। शीत काल में लोहे को सम्भालें। साधारणतया मुंह को सम्भाल कर रखना चाहिए।

8 बुरे आदमी के पास ताकत आएगा तो वह लोगों को पानी भी नाप कर देगा।

9 स्वार्थ सिद्ध हो जाने के बाद शिष्टाचार की परवाह नहीं। भोजन स्वादिष्ट हो तो इतना खाओ की पेट फूल कर मर भी जाएं। तो भी चिन्ता नहीं।

10 सुस्त आदमी को कोई कष्ट नहीं होता है। उसे डॉक्टर को भी दिखाने की आवश्यकता नहीं।

11 बसंत का समय लम्बा होता है। उस समय सर्दी भी होती है और गर्मी भी। उसी तरह आदमी की आयु लम्बी होती है जिसमें सुख भी है और दुख भी।•

– लोबज़ांग

भोटी लिप्यांतर– तोबदन

रोहतांग टनल

भिद जाएगा दीवार अटल,
और खुल जाएगा रोहतांग टनल।
मिट जाएगी थकान चढ़ने की ऊंचाई,
अदृश्य हो जाएंगीं वो तीक्ष्ण ठण्डी हवाऐं,
जो चीरती हैं छाती को पथरीली।
फासला दिन का रह जाएगा घण्टे का।
हट जाएंगे सड़कों के किनारे पर से,
ढेर आलू और मटर की बोरियों के।
उभर आएंगी गगनचुम्बी अट्टालिकाएं,
हर तरफ दो तीन सितारों वाले,
जो उगलेंगे ढेर मल और कूड़े का।
तब ढो रही होंगी चन्द्र, भागा
और चन्द्रभागा की कलकल धारा,
बोझ चुपचाप खुशहाली का।
बहा रही होगी आंसू, बाला निर्मल हिमालय की,
एक और गंगा, पवित्र देश का।

–तोबदन

गुरू तगछ़ंग रेपा की उड्डयान यात्रा

तगछ़ंग रेपा (1574–1651) ऐसे ही एक गुरू थे जो तिब्बत से पश्चिमोतर भारत की तीर्थ यात्रा पर आए थे। यात्रा समाप्ति के पश्चात यद्यपि वे तिब्बत गए, परन्तु अन्ततः लद्दाख के तत्कालीन राजा सिंगे नमझल के आग्रह पर लद्दाख में बस गए। वहां उन्होंने हेमिस गोन्पा की स्थापना की। लाहुल में गेमुर गोन्पा भी उन्हीं से सम्बन्धित माना जाता है। दोनों स्थान पर उनकी मूर्तियां स्थापित हैं तथा उनके सम्मान में वार्षिक पूजा व प्रार्थना का समारोह होता है।

तगछ़ंग रेपा एक परम्परा की कड़ी हैं। पश्चिमोतर भारत में उर्ग्यन (संस्कृत में उड्डयान) नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जिसे पाकिस्तान के वर्तमान स्वात घाटी से चिन्हित किया जाता है। तिब्बती गुरूओं को यह दो कारणों से आकर्षित करती थी। पहला यह कि तन्त्रयान के महान आचार्य गुरू पदमसंभव, जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म को स्थिरता दिलाया था, का यह जन्म स्थल माना जाता है। दूसरा यह कि यह तान्त्रिक विद्या का उदभव स्थल माना जाता है।

सर्वप्रथम इस प्रसिद्ध तीर्थ स्थल की ओर आमुख होने वाले गुरू गोछ़गंपा ;1189–1253द्ध थे। वे विद्वान थे। परन्तु ये वास्तव में उड्डयान पहुंचने में सफल नहीं हुए। वे जालन्धर यानि वर्तमान कांगड़ा ;हि0प्र0द्ध से वापिस हो गए। धर्मसिंगे ;1223–1303द्ध ने उनका अनुसरण किया और वे सफल भी रहे। वे उर्ग्यन रेपा के नाम से प्रसिद्ध हुए। तगछ़ंग रेपा तीसरे यात्री थे, परन्तु वे दूसरे सफल यात्री हुए। वे द्वितीय उर्ग्यनपा कहेलाए। इस यात्रा में सफल व्यक्ति को इस नाम से सम्मानित करना परम्परा बन गई थी। इस परम्परा में चौथे तथा अन्तिम यात्री थे लद्दाख के जंस्कर क्षेत्र के निवासी लामा नावांग छ़ेरिंग (1657–1730)। उन्हें भी जालन्धर से लौटना पड़ा।

तगछ़ंग रेपा की यात्रा का वर्णन तीसे (कैलाश) पर्वत से आरम्भ होती है। उनके साथ कुछ लामा यात्री थे। उन्होंने सबसे सीधा और निकटतम रास्ता अपनाया। वे खुनु (किन्नौर), सुकेत (मंडी), ज्वालामुख और नगरकोट (कांगड़ा), जिसे वे नागकोटर कहते हैं, पहुंचे। वहां से तीन दिन और आगे जाकर बालानगर पहुंचे। वहां से उन्हें वापिस होना पड़ा क्योंकि उनके कुछ साथियों की मृत्यु हो गई थी। शेष साथियों ने आगे जाने से मना कर दिया और वे स्वदेश लौटना चाहते थे। तब वे कश्मीर होते हुए जंस्कर से होकर लाहुल पहुंचे और यहां वे एक वर्ष तक रहे।

लाहुल में उन्हें एक लामा, ज्हिवा नमझल, मिले जो उनके साथ उर्ग्यन जाने के लिए तैयार हो गया। वह टूटी–फूटी हिन्दी भी जानता था। पांगी और चम्बा होते हुए भारत के मैदानों में उतरे। वे अपने पूर्व गामी उर्ग्यन रेपा का अनुसरण करना चाहते थे। परंतु उनके विवरण से उन्हें कोई विशेष मदद नहीं मिल रही थी।

यात्रा में उन्हें बहुत कठिनाई हो रही थी। गुंडे और लुटेरे मिले। यह देखकर उनका साथी उन्हें छोड़कर चला आया। गुरू जी फिर भी तनिक भी विचलित नहीं हुए। वे चलते रहे, जब तक कि उनकी यात्रा पूरी नहीं हुई।

उस समय तक संभवतः उड्डयान में बौद्ध धर्म लुप्त हो चुका था। उनका सामना नाथपन्थी योगियों से हुआ जिन्होंने अपने पन्थ में दीक्षित किया और उन्हें एक ग्रन्थ से पाठ भी कराया गया। उन्हें श्यामोनाथ अर्थात शामनाथ नाम दिया गया। इस घटना को उन्होंने एक उपलब्धि माना। उन्हें प्रसन्नता थी कि वे एक भारतीय योगी हो गए हैं। उनकी मूर्तियों और चित्रों में वे शरीर पर पतली सूती चादर, सिर पर गोल टोपी और कानों में बड़े–बड़े कुंडल पहने दिखाई देते हैं। यही उनकी पहचान है।

अपने यात्रा के दौरान उन्होंने अच्छी हिन्दी सीखी। उन्होंने अपने यात्रा विवरण में काफी हिन्दी के वाक्य उद्धत किए हैं। स्वभाविक रूप से यह उर्दू और पंजाबी मिश्रित है। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। प्रथम मूल रूप में अपने तिब्बती भेष में, तत्पश्चात परिवर्धित रूप में दिया जा रहा है।

मूल पाठ

भो–टन्ती ह–रमज़–ती चो–रे ह–यी।
तु–मी अ–य–घी क–हं ते अ–यी।
ह–मी भो–टन्ती ज़ो–की हु–व।
क–शी–मी–री भो–टन्ती अ–य।
ह–मी क–शी–मी–री न–ही।
ह–म–र। म–हा ची–न्द हु–व। क–शी–मी–री थी–बन्ड प–रे।
द–श म–यी–नी घ–य ह–यी।
भो–टन्ती ज़ो–की झंख ह–यी।
झंख ज़ो–की फ–ल हो।

हिन्दी रूप
नीचे उनकी रचना के एक पद्यांश का अनुवाद दिया जा रहा है। मूल में शीर्षक नहीं हैं।

ऊंचा और ऊंचा

हिमवत पर्वत पर निवास करने वाले
ओ श्वेत सिंह मैं भी अब तुम्हारे पास आ गया हूं।
बर्फीली पवर्तों पर विचरने वाले सिंह,
तुम बर्फीली हवाओं से घबराते नहीं हो।
तुम्हें यदि अपने ग्रीवा के अयालों से प्रेम है
तो हम ऊंची बर्फीली शिखरों की ओर चलें।।

गहरे नीले आकाश में तीव्र गति से
उड़ने वाले ओ गरूढ़,
मैं भी अब तुम्हारे पास आ गया हूं।
आकाश में तीव्रगति से विचरण करते हुए
उसके विशाल क्षेत्र में अपने सहयोगियों के
साथ खेलते हुए तुम घबराते नहीं हो।
तुम्हे यदि अपने विशाल पंखों से
उड़ने में आनन्द आता है
तो हम ऊपर पृथ्वी और आकाश के
मध्य की ऊंचाई की ओर चलें।।

...तोबदन

Sunder Singh, an Amchi

Before Independence it was a common practice among the young boys from Lahul and other areas around it to go to Tibet for higher studies. They usually ran away from their home after having earned a small amount of money to meet some measure of expenditure on the way. After completing their studies there they would come back to their native place and then would occupy a good status in the society. Sunder Singh who belonged to village Jhis i.e. Jispa in sTod, Lahul, was a similar boy. He earned his degree in medicine in Tibet. After his return to home he started practicing medicine and became a famous vaid or Amchi ***(doctor)*** in his time. This piece of information was obtained from him in around 1980. It is an example of the manner in which the student lamas from the area used to go to Tibet.

Sunder Singh whose childhood name was Tashi Tshering was born to mother Yeshe Dolma and father Dechen Zangpo on a Saturday in the 10th month of Tibetan calendar in the year chags-bya (iron-bird C.E. 1921). The name Sunder Singh was given to him by Thakur Abhey Chand (Nyima Wangyal) of Khangsar i.e. Kolong. He belonged to the house of Melag Khangchung and to the rus, clan, of Lonchhenpa. He started working as shepherd of the village at the age of 12-13 years and at times he worked as household servant. Then suddenly his mind changed and decided to go to Tibet. While he started from Lahul he had with him besides the sum of around rupees one hundred and sixty, a cup, a kettle and a spoon.

In Kullu he met a Ladakhi boy named Singe. The two first went to Tsho (Riwalsar, Mandi), then from there in a motor (bus) to Hoshiarpur. There they boarded a rail. He was happy, feeling curious and anxious. They had no ticket. More than this by ignorance they had boarded a first class bogey. On the way the T.T. turned them out. They also did not know Hindi. A man asked them where they were going. They told that they were going to Bodhgaya. He advised them to purchase ticket upto Lucknow otherwise they would be beaten and turned out again. They purchased a III class ticket and got down at Lucknow. They went to the bazaar and stayed there for two days in open area. There Sunder Singh met a cheat who showed him a gold bangle which he purchased for thirty-seven rupees. He was very much pleased with the deal. He also did not disclose to his companion. Then from here they had become a bit cleverer. From there upto Varanasi they went without ticket. There they met a Tibetan Pon (an artist). He tested the gold and found it to be false.

There they purchased ticket for Bodhgaya. From Gaya they went via Patna to Raksol. Then they purchased ticket for hilly train upto Birganj, which was the last rail terminal. There was no bus to Nepal hence they started on foot. At Kathmandu they stayed for four days. Here they visited the Byarung Khashor chaitya and Phagpa Shinkun. They then went on foot begging via Barabis. They reached Tsogdur through Nyelam. There a kind of tax called thab-khral (hearth-tax) had to be paid. There the bridge the was stalled in the day and dismantled in the night.

Then comes Thongla pass. At the end there is the temple dedicated to Phadampa Sangey. They then went to Dingri and from there to Shelkar. There Indian rupee was not accepted. Then they had to go begging. Sampa was so scarce that even after begging in twenty-five houses it measured merely a cupful.

Before reaching Sakya they lost their way. A gentleman offered a cap of wolf skin, which was warm and beautiful, and a good quantity of sampa and fat. He gave it out of compassion seeing him young. On the way they met three persons. They appeared to be jagpa, robbers. One of them carried off his cap. They said nothing out of fear. They then crossed a pass. They reached a temple, begged there for boiled water and tea. The lama there gave water that

was left after extracting cheese. He also gave some peas and sampa. They relished the present. After all they reached Sakya.
At Sakya they received Sampa in good quantity measuring about three seers. They felt as if a good treasure was discovered. They visited a gonpa where they were allowed to stay. The room was not warm. A lama gave tea. It was enjoyable. Then they went to Tashi Lhunpo and then to Shigatse. There alms were available in larger quantity. There they also met some known persons of his companion. They got tea in the temple free of cost. They got there sampa from the friends to the extent about ten seers. Sunder Singh was asked to stay as lama there. He stayed for fifteen days. One lama from Zankhar gave him about one seer of sampa. From there he went to Gyangzhing. He purchased ghee for three srang.
Then they started journey to Lhasa. The stock of sampa exhausted at Gyangtse in the way. His companion was wise, he did not share his stock. There was an Indian Post Office there. He posted a letter there for home telling that he had reached there. He had written the letter in Bhoti but he wrote the address in somewhat broken Hindi. Then they reached Yamdok lake. There a lama gave them sampa, fat and tea. The companion went to Drikung alone. Sunder Singh wept. He went towards a village and knocked at the door of a house. Garzha, Lahul, being a small area was unknown to the people, so he told that he had come from Ladak.
He stayed there for one month till he finished reading the Yum. It was good time for him. He went to Phyingla, a pass. A helper was sent with him. At Sezhi there stayed a gelong from Kardang gonpa, from Lahul. He did not go there. Because it was the first month of the year there were many people going to Lhasa. He accompanied them. They gave him food on the way. He stayed there. Others left after three days. But he was not allowed to stay there taking him as a thief. Then he went to Drikung to meet his companion who by then had acquired a good status. He gave sampa and kholag, a preparation of sampa. He was advised to stay there as lama. But he insisted to visit Yongzin Rinpoche, a Dukpa. He went to the gonpa of Gyalwa Karmapa at Tulung Tsurbu. There were many lama students there from Ladak and Rubshu. He stayed there for three months. Then he came with the Rinpoche who met his expenses of food. Then he went to Zomo Kharag. He stayed there with the Rinpoche for one year learning dbang and lhung. The Rinpoche advised him to study Amchi. The Rinpoche sent him to Chhapgpri to study with Gergan Ngag dbang ye-shes. He studied under him for seven years. The Chhagpori Medical College was built by Desid Sangye Gyatsho in the 17th century. This institution was ultimately destroyed in 1959.
Then he went to Mentsi khang to study under Rev. Kyirab Norbu, a famous professor in Medicine in Tibet. He stayed at Bar-klu-Phug where the professor had his residence. There is a gonpa of Grub-thob Thang sTong rGyalpo. He met here a lama named Lung rtogs bshad sgrub rtse ba'i bla-m'i kun 'dung belonging to Gelug sect. He studied under him spyod-'jug, she-ting of Nagarjuna, sum-rtags, zhal-glung of Kun-dga lama, snyan-nag, meditation, etc. At Khundeling he practised Amchi which was the seat of Ho-thog tho (sTag Tshang rin po chhe), a rich person. Sunder Singh came once with him to India and visited Nepal, Gaya, Calcutta, Varanasi, Kushinagar, Lumbini, Sarnath Haridwar, Amritsar, Tso Padma, Jawalamukhi, etc. During this time Sunder Singh also visited his home. He wept having come after so long time. He stayed for a year at home and then again went to Tibet. The members of his family were happy. By that time the Chinese had reached Gyangtse. He went to Kundiling and practiced as Amchi. The Rinpoche was going to China. He waited till the return of the Rinpoche. Now he had money. As he had completed his studies, he desired to come to India. At the end he took a test. He passed the examination and was awarded a certificate. He desired to come back to Kundeling where he had left many of his books and articles.

After coming to India he started practicing at Manali in Kullu. He collected about 200 herbs from Lahul and adjacent areas. He started a school of Amchi of his own, taught about hundred students without taking any fees. The students belonged to Lahul, Khunu (Kinnaur), Ladak, Jangthang (Rubshu), Piti and Kullu.
At Chhagpori he studied day and night and labored hard. He was ahead of others by one year. Then he started teaching the students of his own class. Here he had recovered his health. He tells that in Tibet there is facility for education for every one, even for a destitute, if one has only desire to study. There is a saying in Tibet that anybody can occupy the throne at Gadan provided one exhibits one's capability. One can study there even by begging. There is no bar of age for education and the ranks were open to all. The relations with the teacher and the institution was personal. Students used to come to Sera, Depung and Gadan from India, Bhutan, Nepal, Lahul, Spiti, Zanskar, Ladak, Kinnaur, mNgari, Sogpo, China, Amdo (Kham), Japan and Europe.
Translation of the Certificate
Shri Sunder Singh, an Indian citizen from Lahoul village, district Kangra, east of Punjab (India), with great interest and due regards to the learned Professors of Mentsikhang, The Tibetan Government's Medical cum Astrological College, Lhasa, Tibet, passed the examinations held by the Medical Conference in the following subjects:
1. Fundamental books on Tibetan Medicine.
2. Nervous system, science of Physical Anatomy.
3. The science of diagnosis by feeling the nerve, examining urine and stool.
4. Through practical knowledge of Preparation and administration of the Tibetan medicine.
This is, therefore, to certify that the general public and the patients can very well rely upon his medical faculty.
Dated Lhasa, Tibet, the 31st January, 1955. a. Seal given to the said College by the Cabinet of the Government of Tibet to use on medical certificates. b. The seal given by the 13th Dalai lama to the college to fix as medical Certificate issued.
c. Seal of the Chief Medical Officer of the College.
It has been ascertained from the Khanchen, the officer in charge, the Mentsi Khang (Tibetan Government Medical College, Lhasa) that the above certificate is genuine and was granted by him.
Dated Lhasa, Tibet the 7th February, 1955. Seal of Consulate General of India, Lhasa, Tibet.
Signed. P.N. Menon, Consul General of India, Lhasa, Tibet.
Tashi Tshering, Amchi, died in 1986 at Manali. His school is still running with the financial aid from the government of Himachal Pradesh.
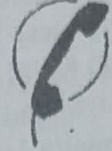
- Tobdan
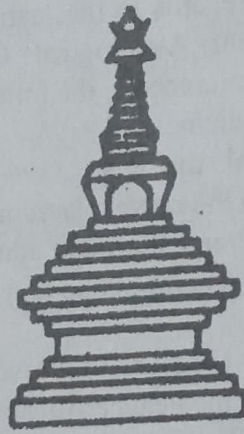
अजेय : रांगचा़ पर

प्रेम सिंह : फ–ला (फाल) की पूजा के लिए तैयारी करता

रांगचा : अछूता प्राचीन

सुखदास : अपनी कार्यशाला में

Printed by : **Gupta Offset Printers**, Kullu.